संधि

- **संधि:** संधि शब्द का अर्थ है-संयोग, समझौता या एक तरह का वर्ण विकार।
- **परिभाषा:** वह ध्वनि विकार जो परस्पर दो वर्णों के मेल से उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि की दो आवश्यक शर्तें हैं:

1. परस्पर दो वर्णों का मेल
2. ध्वनि विकार/परिवर्तन

- अगर इन दोनों शर्तों में से किसी एक शर्त का लोप हो तो संधि रूप नहीं बन सकता।
- दो शब्द या पद जब एक दूसरे के निकट आते हैं तब उच्चारण को सुविधा के लिए पहले शब्द की अंतिम और दूसरे शब्द की प्रारंभिक ध्वनि एक दूसरे से मिल जाती है। इस मिलावट से जो ध्वनि विकार उत्पन्न होता है, वहीं संधि है।

संधि के भेद

संधि के तीन भेद होते हैं:

1. स्वर संधि
2. व्यञ्जन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

- दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार या रूप परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। अर्थात् वह ध्वनि विकार जो परस्पर दो वर्णों के (स्वर+स्वर) के मेल से उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।
- स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं:

(क) दीर्घ स्वर संधि

(ख) गुण स्वर संधि

(ग) वृद्धि स्वर संधि

(घ) यण् स्वर संधि

(ङ) अयादि स्वर संधि

❖ दीर्घ संधि :

- किसी स्वर के ह्रस्व या दीर्घ रूप के बाद यदि उसी स्वर का ह्रस्व या दीर्घ रूप आए तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। इसी को दीर्घ संधि कहते हैं।
- जहाँ अ/आ के बाद अ/आ आये, इ/ई के बाद इ/ई आये, उ/ऊ के बाद उ/ऊ आये तो दोनों मिलकर दीर्घ स्वर हो जाते हैं।

अ + अ = आ

- ☞ परम + अर्थी = परमार्थी
- ☞ राष्ट्र + अध्यक्ष = राष्ट्राध्यक्ष
- ☞ दिवस + अवसान = दिवसावसान
- ☞ सर्व + अंगीण = सर्वांगीण
- ☞ बीज + अंकुर = बीजांकुर
- ☞ गीत + अंजलि = गीतांजलि
- ☞ स्वर्ण + अवसर = स्वर्णावसर
- ☞ चरण + अमृत = चरणामृत
- ☞ मुर + अरि = मुरारि
- ☞ स + अवधि = सावधि
- ☞ कल्प + अंत = कल्पांत
- ☞ क्वथन + अंक = क्वथनांक
- ☞ युग + अंतर = युगांतर
- ☞ दिव्य + अस्त्र = दिव्यास्त्र
- ☞ मध्य + अवधि = मध्यावधि
- ☞ प्रसंग + अनुकूल = प्रसंगानुकूल
- ☞ देह + अतीत = देहातीत
- ☞ हस्त + अंतरण = हस्तांतरण
- ☞ आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र
- ☞ दिवस + अंत = दिवसांत
- ☞ उदय + अचल = उदयाचल
- ☞ लोहित + अंग = लोहितांग
- ☞ अद्‌य + अवधि = अद्‌यावधि
- ☞ अस्त + अचल = अस्ताचल
- ☞ उप + अध्याय = उपाध्याय
- ☞ नयन + अभिराम = नयनाभिराम
- ☞ भग्न + अवशेष = भग्नावशेष
- ☞ स + अवयव = सावयव
- ☞ स्व + अधीन = स्वाधीन
- ☞ विचार + अधीन = विचाराधीन
- ☞ स्व + अर्थ = स्वार्थ
- ☞ शीत + अंशु = शीतांशु
- ☞ स + अनुरोध = सानुरोध
- ☞ मर्म + अंतक = मर्मांतक
- ☞ शत + अब्दी = शताब्दी
- ☞ विष + अणु = विषाणु
- ☞ ऊर्ध्व + अधर = उर्ध्वाधर
- ☞ सुख + अनुभूति = सुखानुभूति
- ☞ हर्ष + अतिरेक = हर्षातिरेक
- ☞ सह + अनुभूति = सहानुभूति
- ☞ स्व + अनुभूत = स्वानुभूत
- ☞ स्व + ध्याय = स्वाध्याय
- ☞ देश + अटन = देशाटन
- ☞ उत्तर + अर्द्ध = उत्तरार्द्ध
- ☞ मुर + अरि = मुरारि
- ☞ राम + अयन = रामायण
- ☞ कीट + अणु = कीटाणु
- ☞ हिम + अद्रि = हिमाद्रि
- ☞ नव + अंकुर = नवांकुर
- ☞ अधिक + अंश = अधिकांश
- ☞ अंध + अनुगामी = अंधानुगामी
- ☞ स्व + अभिमान = स्वाभिमान
- ☞ न्यून + अधिक = न्यूनाधिक

☞ तीर्थ + अटन = तीर्थाटन
☞ शत + अधिक = शताधिक
☞ जन + अर्दन = जनार्दन
☞ धर्म + अधिकारी = धर्माधिकारी
☞ दृश्य + अवली = दृश्यावली
☞ ग्राम + अंचल = ग्रामांचल
☞ पोषण + अभाव = पोषणाभाव
☞ स्वत्व + अधिकार = स्वत्वाधिकार
☞ पत्र + अंक = पत्रांक
☞ पाठ + अंतर = पाठांतर
☞ रस + अनुभूति = रसानुभूति
☞ आनंद + अतिरेक = आनंदातिरेक
☞ विरह + अनल = विरहानल
☞ शोक + अन्वित = शोकान्वित
☞ क्रम + अंक = क्रमांक
☞ पूर्ण + अंक = पूर्णांक
☞ जठर + अग्नि = जठराग्नि
☞ उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार
☞ स्पर्श + अनुभूति = स्पर्शानुभूति
☞ तथ्य + अन्वेषण = तथ्यान्वेषण
☞ मेघ + अवली = मेघावली
☞ शत् + अब्दी = शताब्दी
☞ मर्म + अंतक = मर्मांतक
☞ विक्रम + अब्द = विक्रमाब्द
☞ पर + अधीन = पराधीन
☞ रोम + अवली = रोमावली
☞ रत्न + अवली = रत्नावली

☞ अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी
☞ युवन् + अवस्था = युवावस्था
☞ देश + अंतर = देशांतर
☞ वात + अयन = वातायेन
☞ विकल + अंग = विकलांग
☞ दीप + अवली = दीपावली
☞ लोक + अपवाद = लोकापवाद
☞ अर्ध + अंश = अर्धांश
☞ परम + अर्थ = परमार्थ
☞ पद + अवनत = पदावनत
☞ मुख + अपेसी = मुखापेसी
☞ सुषुप्त + अवस्था = सुषुप्तावस्था
☞ अपर + अहन् = अपराह्न
☞ मध्य + अहन् = मध्यान्ह
☞ पूर्व + अहन् = पूर्वान्ह
☞ प्र + अंगन = प्रांगन
☞ गत + अनुगतिक = गतानुगतिक
☞ शत् + अंश = शतांश
☞ अक्ष + अंश = अक्षांश
☞ रस + अयन = रसायन
☞ मध्य + अवकाश = मध्यावकाश
☞ प्र + अर्थी = प्रार्थी
☞ मोह + अंध = मोहांध
☞ मूल्य + अंकन = मूल्यांकन
☞ नयन + अंबु = नयनांबु
☞ दाव + अग्नि = दावाग्नि
☞ ऊह + अपोह = ऊहापोह

☞ नील	+	अंचल	=	नीलांचल
☞ अधिक	+	अधिक	=	अधिकाधिक
☞ मत	+	अंतर	=	मतांतर
☞ गीत	+	अवली	=	गीतावली
☞ गीत	+	अंजलि	=	गीतांजलि
☞ धर्म	+	अर्थ	=	धर्मार्थ
☞ पद	+	अवनत	=	पदावनत
☞ तिल	+	अंजलि	=	तिलांजलि
☞ दाव	+	अनल	=	दावानल
☞ विन्ध्य	+	अचल	=	विन्ध्याचल
☞ अर	+	अवली	=	अरावली
☞ जीव	+	अश्म	=	जीवाश्म
☞ पद	+	अर्थ	=	पदार्थ
☞ पाठ	+	अवलि	=	पाठावली
☞ उत्तम	+	अंग	=	उत्तमांग
☞ धन	+	अर्थी	=	धनार्थी
☞ राम	+	अवतार	=	रामावतार
☞ केशव	+	अरि	=	केशवारि
☞ सत्य	+	अर्थी	=	सत्यार्थी
☞ वीर	+	अंगना	=	वीरांगना
☞ जन्म	+	अंतर	=	जन्मांतर
☞ त्रिगुण	+	अतीत	=	त्रिगुणातीत
☞ दश	+	अश्वमेध	=	दशाश्वमेध
☞ दास	+	अनुभव	=	दासानुभव
☞ दिव्य	+	अस्त्र	=	दिव्यास्त्र
☞ द्वैत	+	अद्वैत	=	दैताद्वैत
☞ धर्म	+	अधर्म	=	धर्माधर्म
☞ पंच	+	अग्नि	=	पंचाग्नि
☞ पक्व	+	अन्न	=	पक्वान्न
☞ पर	+	अधीन	=	पराधीन
☞ पाठ	+	अन्तर	=	पाठान्तर
☞ मूल	+	अंकुर	=	मूलांकुर
☞ दैत्य	+	अरि	=	दैत्यारि
☞ देह	+	अंत	=	देहांत
☞ शरण	+	अर्थी	=	शरणार्थी
☞ सूर्य	+	अस्त	=	सूर्यास्त
☞ काम	+	अरि	=	कामारि
☞ कोमल	+	अंगी	=	कोमलांगी
☞ छेक	+	अपहुति	=	छेकापहुति
☞ दिन	+	अंत	=	दिनांत
☞ धर्म	+	अधिकरण	=	धर्माधिकरण
☞ नील	+	अम्बर	=	नीलाम्बर
☞ पद	+	अर्पण	=	पदार्पण
☞ पुण्डरीक	+	अक्ष	=	पुण्डरीकाक्ष
☞ मलय	+	अनिल	=	मलयानिल
☞ मृग	+	अंक	=	मृगांक
☞ यज्ञ	+	अग्नि	=	यज्ञाग्नि
☞ लाट	+	अनुप्रास	=	लाटानुप्रास
☞ लोक	+	अधिपति	=	लोकाधिपति
☞ लोहित	+	अश्व	=	लोहिताश्व
☞ शक	+	अरि	=	शकारि
☞ शब्द	+	अलंकार	=	शब्दालंकार
☞ शास्त्र	+	अनुसार	=	शास्त्रानुसार
☞ शुभ्र	+	अंशु	=	शुभ्रांशु

☞ आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र

☞ ध्वंस + अवशेष = ध्वंसावशेष

☞ जन + अर्दन = जनार्दन

☞ हरिण + अक्षि = हरिणाक्षि

☞ शकट + अरि = शकटारि

☞ लोचन + अभिराम = लोचनाभिराम

☞ मल + अवरोध = मलावरोध

☞ मंत्र + अभिषिक्ति= मंत्राभिषिक्ति

☞ मंद + अग्नि = मंदाग्नि

☞ बद्ध + अंजलि = बद्धांजलि

☞ बल + अध्यक्ष = बलाध्यक्ष

☞ श्लेष + अलंकार = श्लेषालंकार

☞ शश + अंक = शशांक

☞ स्व + अंगीकरण = स्वांगीकरण

☞ संवेद + अंग = संवेदांग

☞ सूत्र + अलंकार = सूत्रालंकार

☞ पर्ण + अंग = पर्णांग

☞ छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी

☞ शव + अवधान = शवावधान

☞ प्र + अंकुर = प्रांकुर

☞ अभय + अरण्य = अभयारण्य

☞ पद + अवन्त = पदावन्त

☞ शक + अब्द = शकाब्द

☞ रूद्र + अक्ष = रूद्राक्ष

☞ मल्लिक + अर्जुन = मल्लिकार्जुन

☞ राम + अनुचर = रामानुचर

☞ स्वर्ण + अवसर = स्वर्णावसर

☞ ज्ञान + अभाव = ज्ञानाभाव

☞ कल्प + अंत = कल्पांत

☞ कुश + आसन = कुशासन

अ + आ = आ

☞ हिम + आलय = हिमालय

☞ रत्न + आकर = रत्नाकर

☞ वृद्ध + आश्रम = वृद्धाश्रम

☞ रत्न + आकर = रत्नाकर

☞ सिंह + आसन = सिंहासन

☞ भय + आक्रांत = भयाक्रांत

☞ ऐक्य + आत्म = ऐक्यात्म

☞ स्वर्ण + आभ = स्वर्णाभ

☞ तुषार + आच्छन्न = तुषाराच्छन्न

☞ अन्य + आश्रित = अन्याश्रित

☞ कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण

☞ मेघ + आच्छन्न = मेघाछन्न

☞ स्थान + आपन्न = स्थानापन्न

☞ मेघ + आलय = मेघालय

☞ धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

☞ भाव + आविष्ट = भावाविष्ट

☞ शीत + आकुल = शीताकुल

☞ आयुध + आगार = आयुधागार

☞ हिम + आगम = हिमागम

☞ स्वर्ण + आभ = स्वर्णाभ

☞ धूम + आच्छादित = धूमाच्छादित

☞ विषय + आसक्त = विषयासक्त

☞ मित + आहार = मिताहार

☞ खग + आश्रय = खगाश्रय
☞ भय + आकुल = भयाकुल
☞ आम + आशय = आमाशय
☞ गर्भ + आधान = गर्भाधान
☞ स्नेह + आकांक्षी = स्नेहाकांक्षी
☞ विजय + आकांक्षी = विजयाकांक्षी
☞ दीप + आधार = दीपाधार
☞ मकर + आकृति = मकराकृति
☞ प्रेम + आसक्त = प्रेमासक्त
☞ विरह + आतुर = विरहातुर
☞ अजन + आकीर्ण = जनकीर्ण
☞ सौभाग्य + आकांक्षिणी= सौभाग्यकांक्षिणी
☞ छात्र + आवास = छात्रावास
☞ प्राण + आयाम = प्राणायाम
☞ मकर + आकृति = मकराकृति
☞ पित्त + आशय = पित्ताशय
☞ शोक + आकुल = शोकाकुल
☞ पंच + आयत = पंचायत
☞ कुसुम + आकर = कुसुमाकर
☞ हिम + आवृत = हिमावृत
☞ शत + आयु = शतायु
☞ कुश + आसन = कुशासन
☞ विवाद + आस्पद = विवादास्पद
☞ शाक + आहारी = शाकाहारी
☞ स्थान + आपन्न = स्थानापन्न
☞ रस + आभास = रसाभास
☞ मरण + आसन्न = मरणासन्न

☞ सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
☞ भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार
☞ पूर्ण + आहूति = पूर्णाहूति
☞ जन + आदेश = जनादेश
☞ मेल + आलय = मेलालय
☞ लोक + आयुक्त = लोकायुक्त
☞ यात + आयात = यातायात
☞ गुरूत्व + आकर्षण = गुरूत्वाकर्षण
☞ स्वर्ग + आरोहण = स्वर्गारोहण
☞ अन्य + आश्रित = अन्याश्रित
☞ हास्य + आस्पद = हास्यास्पद
☞ गमन + आगमन = गमनागमन
☞ सिंह + आसन = सिंहासन
☞ कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण
☞ कार्य + आलय = कार्यालय
☞ अरण्य + आच्छादित= अरण्याच्छादित
☞ घन + आनन्द = घनानन्द
☞ चरण + आयुध = चरणायुध
☞ तमस + आच्छन्न = तमसाछन्न
☞ तृण + आवर्त = तृणावर्त
☞ द्रौण + आचार्य = द्रौणाचार्य
☞ कृष्ण + आनंद = कृष्णानंद
☞ गज + आनन = गजानन
☞ चिर + आयु = चिरायु
☞ नख + आयुध = नखायुध
☞ तुषार + आवृत = तुषारावृत
☞ शिव + आलय = शिवालय

☞ देव + आलय = देवालय
☞ प्रकाश + आनन्द = प्रकाशानन्द
☞ भोजन + आलय = भोजनालय
☞ चन्द्र + आकार = चन्द्राकार
☞ जन + आश्रय = जनाश्रय
☞ देव + आगम = देवागम
☞ धर्म + आदेश = धर्मादेश
☞ पुण्य + आत्मा = पुण्यात्मा
☞ भद्र + आसन = भद्रासन
☞ भाव + आवेश = भावावेश
☞ शरण + आगत = शरणागत
☞ संकट + आपन्न = संकटापन्न
☞ भाव + आविष्ट = भावाविष्ट
☞ गर्भ + आधान = गर्भाधान
☞ खग + आश्रय = खगाश्रय
☞ नीच + आशय = नीचाशय
☞ पद + आक्रान्त = पदाक्रान्त
☞ पद्य + आकर = पद्याकर
☞ पान + आगार = पानागार
☞ श्लोक + आबद्ध = श्लोकाबद्ध
☞ संशय + आत्मकता = संशयात्मकता
☞ स्वर + आदेश = स्वरादेश
☞ हृदय + आकाश = हृदयाकाश
☞ आर्य + आवर्त = आर्यावर्त
☞ योग + आचार = योगाचार
☞ राम + आज्ञा = रामाज्ञा

आ + अ = आ

☞ तथा + अपि = तथापि
☞ विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
☞ रेखा + अंश = रेखांश
☞ विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास
☞ निशा + अंत = निशांत
☞ द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट
☞ दीक्षा + अंत = दीक्षांत
☞ ब्रह्मा + अंड = ब्रह्मांड
☞ श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि
☞ सुधा + अंशु = सुधांशु
☞ रचना + अवली = रचनावली
☞ महा + अमात्य = महामात्य
☞ द्राक्षा + अवलेह = द्राक्षावलेह
☞ पुरा + अवशेष = पुरावशेष
☞ मुक्ता + अवली = मुक्तावली
☞ सत्ता + अंतरण = सत्तांरण
☞ द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
☞ पुरा + अवतंश = पुरावतंश
☞ विद्या + अर्जन = विद्यार्जन
☞ क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन
☞ करूणा + अवतार = करूणावतार

आ + आ = आ

☞ विद्या + आलय = विद्यालय
☞ महा + आशय = महाशय
☞ विद्या + आनन्द = विद्यानन्द
☞ विद्या + आरम्भ = विद्यारम्भ

☞ प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

☞ द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव

☞ शंका + आलु = शंकालु

☞ क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक

☞ कृपा + आकांक्षी = कृपाकांक्षी

☞ स्वेच्छा + आचार = स्वेच्छाचार

☞ श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

☞ प्रतीक्षा + आलय = प्रतीक्षालय

☞ दया + आनन्द = दयानन्द

☞ प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

☞ श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

☞ दया + आनन्द = दयानंद

☞ चिंता + आतुर = चिंतातुर

☞ प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद

☞ निशा + आनन = निशानन

☞ कारा + आवास = कारावास

☞ चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय

☞ वार्ता + आलाप = वार्तालाप

☞ भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध

☞ रचना + आत्मक = रचनात्मक

☞ क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक

☞ कृपा + आकांक्षी = कृपाकांक्षी

☞ महा + आशय = महाशय

☞ कारा + आगार = कारागार

☞ स्वेच्छा + आचार = स्वेच्छाचार

☞ मिथ्या + आचार = मिथ्याचार

☞ महा + आशय = महाशय

☞ माया + आचरण = मायाचरण

इ + इ = ई

☞ रवि + इन्द्र = रवीन्द्र

☞ अभि + इष्ट = अभीष्ट

☞ गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र

☞ अधि + इन = अधीन

☞ प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा

☞ अति + इंद्रिय = अतींद्रिय

☞ प्रति + इत = प्रतीत

☞ मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र

☞ हरि + इच्छा = हरीच्छा

☞ अति + इत = अतीत

☞ योगिन् + इन्द्र = योगीन्द्र

☞ अति + इव = अतीव

☞ मणि + इन्द्र = मणीन्द्र

☞ कवि + इन्द्र = कवीन्द्र

इ + ई = ई

☞ प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

☞ अभि + ईप्सा = अभीप्सा

☞ हरि + ईश = हरीश

☞ परि + ईक्षा = परीक्षा

☞ अधि + ईक्षक = अधीक्षक

☞ वि + ईक्षण = वीक्षण

☞ प्रति + ईक्षत = प्रतीक्षत

☞ कपि + ईश = कपीश

☞ क्षिति + ईश = क्षितीश

☞ अधि + ईश्वर = अधीश्वर

☞ परि + ईक्षण = परीक्षण

☞ गिरि + ईश = गिरीश

☞ गिरि + ईश = गिरीश

☞ परि + ईक्षित = परीक्षित

☞ अधि + ईक्षण = अधीक्षण

☞ वारि + ईश = वारीश

☞ प्रति + ईक्षित = प्रतीक्षित

☞ परि + ईक्षक = परीक्षक

☞ योगिन् + ईश्वर = योगीश्वर

☞ मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर

☞ अति + ईला = अतीला

ई + इ = ई

☞ मही + इन्द्र = महीन्द्र

☞ सुधी + इन्द्र = सुधीन्द्र

☞ यती + इन्द्र = यतीन्द्र

☞ त्रिलोकी + इति = त्रिलोकीति

☞ भवानी + इष्ट = भवानीष्ट

☞ गौरी + इच्छित = गौरीच्छित

☞ नदी + इन्द्र = नदीन्द्र

☞ इन्द्राणी + इव = इन्द्राणीव

☞ कवयित्री + इति = कवयित्रीति

☞ शची + इन्द्र = शचीन्द्र

ई + ई = ई

☞ रजनी + ईश = रजनीश

☞ लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा

☞ मही + ईश = महीश

☞ नदी + ईश = नदीश

☞ श्री + ईश = श्रीश

☞ सती + ईश = सतीश

☞ फणी + ईश्वर = फणीश्वर

☞ नारी + ईश्वर = नारीश्वर

☞ जानकी + ईश = जानकीश

☞ नदी + ईश्वर = नदीश्वर

☞ श्री + ईश = श्रीश

☞ गौरी + ईश = गौरीश

उ + उ = ऊ

☞ भानु + उदय = भानूदय

☞ कटु + उक्ति = कटूक्ति

☞ गुरु + उपदेश = गुरूपदेश

☞ साधु + उन्नति = साधून्नति

☞ मंजु + उषा = मंजूषा

☞ बहु + उद्देशीय = बहूद्देशीय

☞ विधु + उदय = विधूदय

☞ सु + उक्ति = सूक्ति

☞ अनु + उदित = अनूदित

☞ लघु + उत्तम = लघूत्तम

☞ मधु + उत्सव = मधूत्सव

☞ मधु + उत्सव = मधूत्सव

☞ मृत्यु + उपरान्त = मृत्यूपरांत

☞ बहु + उद्देश्य = बहूद्देश्य

☞ पुरु + उत्सव = पुरूत्सव

उ + ऊ = ऊ

☞ सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि

☞ शम्भु + ऊर्जा = शम्भूर्जा

☞ प्रभु + ऊर्ध्व = प्रभूर्ध्व

☞ बहु	+	ऊर्जा	=	बहूर्जा
☞ विभु	+	ऊर्ध्व	=	विभूर्ध्व
☞ लघु	+	ऊर्मि	=	लघूर्मि
☞ मंजु	+	ऊषा	=	मंजूषा
☞ भानु	+	ऊर्ध्व	=	भानूर्ध्व

ऊ + उ = ऊ

☞ भू	+	उपरि	=	भूपरि
☞ वधू	+	उपदेश	=	वधूपदेश
☞ प्रतिभू	+	उचित	=	प्रतिभूचित
☞ वधू	+	उल्लास	=	वधूल्लास
☞ चमू	+	उत्साह	=	चमूत्साह
☞ भू	+	उद्धार	=	भूद्धार
☞ वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
☞ वधू	+	उपालय	=	वधूपालय
☞ चमू	+	उज्ज्वल	=	चमूज्ज्वल

ऊ + ऊ = ऊ

☞ सरयू	+	ऊर्मि	=	सरयूर्मि
☞ भू	+	ऊर्ध्व	=	भूर्ध्व
☞ वधू	+	ऊर्ध्व	=	वधूर्ध्व
☞ चमू	+	ऊर्जा	=	चमूर्जा
☞ भू	+	ऊष्मा	=	भूष्मा
☞ चमू	+	ऊर्मि	=	चमूर्मि
☞ सिन्धू	+	ऊर्मि	=	सिन्धूर्मि

❖ गुण संधि :

- यदि अ/आ के बाद इ/ई आये तो **'ए'**, अ/आ के बाद उ/ऊ आये तो **'ओ'** अ/आ के बाद ऋ आये तो **'अर्'** हो जाता है।

अ + इ = ए

☞ सुर	+	इन्द्र	=	सुरेन्द्र
☞ स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा
☞ न	+	इति	=	नेति
☞ भारत	+	इन्दु	=	भारतेन्दु
☞ घ्राण	+	इन्द्रिय	=	घ्राणेन्द्रिय
☞ उप	+	इन्द्रिय	=	उपेन्द्रिय
☞ कर्म	+	इन्द्र	=	कर्मेन्द्र
☞ साहित्य	+	इतर	=	साहित्येत्तर
☞ वाच	+	इतर	=	वाचेतर
☞ शब्द	+	इतर	=	शब्देतर
☞ शुभ	+	इच्छा	=	शुभेच्छा
☞ प्र	+	इषिति	=	प्रेषिति
☞ अंत्य	+	इष्टि	=	अन्त्येष्टि
☞ हित	+	इच्छा	=	हितेच्छा
☞ प्र	+	इत	=	प्रेत
☞ मृग	+	इन्द्र	=	मृगेन्द्र
☞ नग	+	इन्द्र	=	नगेन्द्र
☞ सत्य	+	इन्द्र	=	सत्येन्द्र
☞ धर्म	+	इन्द्र	=	धर्मेन्द्र
☞ गज	+	इन्द्र	=	गजेन्द्र
☞ उप	+	इन्द्र	=	उपेन्द्र
☞ कर्म	+	इन्द्रिय	=	कर्मेन्द्रिय
☞ शुभ	+	इच्छा	=	शुभेच्छा
☞ मानव	+	इन्द्र	=	मानवेन्द्र
☞ बाल	+	इन्दु	=	बालेन्दु
☞ अल्प	+	इच्छा	=	अल्पेच्छा

☞ इतर + इतर = इतरेतर

☞ जित + इन्द्रिय = जितेन्द्रिय

☞ शुभ + इच्छु = शुभेच्छु

☞ मत्स्य + इन्द्र = मत्स्येन्द्र

☞ भोजन + इच्छुक = भोजनेच्छुक

☞ मानव + इतर = मानवेतर

☞ विवाह + इतर = विवाहेतर

☞ शब्द + इतर = शब्देतर

☞ दनुज + इन्द्र = दनुजेन्द्र

☞ भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र

☞ शुभ + इन्द्र = शुभेन्द्र

☞ खग + इन्द्र = खगेन्द्र

☞ योग + इन्द्र = योगेन्द्र

☞ राक्षस + इन्द्र = राक्षसेन्द्र

☞ राघव + इन्द्र = राघवेन्द्र

☞ सोम + इन्द्र = सोमेन्द्र

☞ न + इष्ट = नेष्ट

☞ कृष्ण + इन्द्र = कृष्णेन्द्र

☞ गोप + इन्द्र = गोपेन्द्र

☞ अंत्य + इष्टि = अन्त्येष्टि

☞ मत्स्य + इन्द्र = मत्स्येन्द्र

☞ नृप + इन्द्र = नृपेन्द्र

☞ वीर + इन्द्र = वीरेन्द्र

☞ शिव + इन्द्र = शिवेन्द्र

☞ शुभ + इच्छा = शुभेच्छा

☞ षोडश + उपचार = षोडशोपचार

☞ सुर + उद्यान = सुरोद्यान

☞ ज्ञान + इन्द्रिय = ज्ञानेन्द्रिय

अ + ई = ए

☞ योग + ईश्वर = योगेश्वर

☞ उप + ईक्षा = उपेक्षा

☞ प्र + ईक्षण = प्रेक्षण

☞ अप + ईक्षा = अपेक्षा

☞ गण + ईश = गणेश

☞ प्र + ईक्षा = प्रेक्षा

☞ नर + ईश = नरेश

☞ अंक + ईक्षण = अंकेक्षण

☞ सर्व + ईश्वर = सर्वेश्वर

☞ देव + ईश = देवेश

☞ सुर + ईश = सुरेश

☞ सिद्ध + ईश्वरी = सिद्धेश्वरी

☞ प्र + ईक्षक = प्रेक्षक

☞ हृदय + ईश = हृदयेश

☞ सर्व + ईश = सर्वेश

☞ हृषीक + ईश = हृषीकेश

☞ प्राण + ईश = प्राणेश

☞ राज + ईश = राजेश

☞ ब्रज + ईश = ब्रजेश

☞ वाम + ईश्वर = वामेश्वर

☞ परम + ईश्वर = परमेश्वर

☞ सुर + ईश्वर = सरेश्वर

☞ राम + ईश्वर = रामेश्वर

☞ भूत + ईश्वर = भूतेश्वर

☞ भुवन + ईश्वर = भुवनेश्वर

☞ दिन + ईश = दिनेश

☞ एक + ईश्वर = एकेश्वर

☞ नक्षत्र + ईश = नक्षत्रेश

☞ नट + ईश = नटेश

☞ भव + ईश = भवेश

☞ जीव + ईश = जीवेश

☞ थान + ईश्वर = थानेश्वर

☞ धन + ईश = धनेश

☞ गज + ईश = गजेश

☞ खग + ईश = खगेश

☞ कमल + ईश = कमलेश

☞ प्र + ईक्षण = प्रेक्षण

☞ अव + ईक्षा = अवेक्षा

☞ योग + ईश = योगेश

☞ लोक + ईश = लोकेश

☞ सोम + ईश = सोमेश

☞ देव + ईश्वर = देवेश्वर

☞ सर्व + ईक्षण = सर्वेक्षण

☞ तारक + ईश्वर = तारकेश्वर

☞ तप + ईश्वर = तपेश्वर

☞ तारक + ईश = तारकेश

☞ दर्शन + इच्छा = दर्शनेच्छा

☞ पर्वत + ईश्वर = पर्वतेश्वर

☞ रावण + ईश्वर = रावणेश्वर

आ + इ = ए

☞ रसना + इंद्रिय = रसनेन्द्रिय

☞ सुधा + इंदु = सुधेन्दु

☞ कृपा + इन्दु = कृपेन्दु

☞ यथा + इष्ट = यथेष्ट

☞ रमा + इन्द्र = रमेन्द्र

☞ राका + इन्दु = राकेन्दु

☞ राजा + इन्द्र = राजेन्द्र

आ + ई = ए

☞ रमा + ईश = रमेश

☞ राका + ईश = राकेश

☞ रमा + ईक्षा = रमेक्षा

☞ गुढ़ाका + ईश = गुढ़ाकेश

☞ महा + ईश = महेश

☞ महा + ईश्वर = महेश्वर

☞ द्वारका + ईश = द्वारकेश

☞ गुड़ाका + ईश = गुड़ाकेश

☞ महा + ईक्षण = महेक्षण

☞ राजा + ईक्षा = राजेक्षा

☞ रमा + ईक्षा = रमेक्षा

☞ मिथिला + ईश = मिथिलेश

☞ ऊर्मिला + ईश = ऊर्मिलेश

☞ गंगा + ईश = गंगेश

☞ थाना + ईश्वर = थानेश्वर

अ + उ = ओ

☞ ग्राम + उत्थान = ग्रामोत्थान

☞ सर्व + उत्तम = सर्वोत्तम

☞ रहस्य + उद्घाटन = रहस्योद्घाटन

☞ चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय

☞ ज्ञान + उदय = ज्ञानोदय

☞ स्व + उपार्जित = स्वोपार्जित

☞	दर्प	+	उक्ति	=	दर्पोक्ति
☞	रोग	+	उपचार	=	रोगोपचार
☞	प्राप्त	+	उदक	=	प्राप्तोदक
☞	प्रेम	+	उन्मत	=	प्रमोन्मत
☞	पूर्व	+	उक्त	=	पूर्वोक्त
☞	व्यंग्य	+	उक्ति	=	व्यंग्योक्ति
☞	मद	+	उन्माद	=	मदोन्मा
☞	अन्य	+	उक्ति	=	अन्योक्ति
☞	नव	+	उदित	=	नवोदित
☞	सांग	+	उपांग	=	सांगोपांग
☞	रस	+	उत्पत्ति	=	रसोत्पत्ति
☞	पर	+	उपकार	=	परोपकार
☞	नव	+	उत्पल	=	नवोत्पल
☞	सूर्य	+	उदय	=	सूर्योदय
☞	भाव	+	उद्रेक	=	भावोद्रेक
☞	हिम	+	उपल	=	हिमोपल
☞	लम्ब	+	उदर	=	लम्बोदर
☞	सर्व	+	उपरि	=	सर्वोपरि
☞	वेद	+	उक्ति	=	वेदोक्ति
☞	मास	+	उत्तम	=	मासोत्तम
☞	नव	+	उन्मेष	=	नवोन्मेष
☞	प्र	+	उत्साहन	=	प्रोत्साहन
☞	सह	+	उदर	=	सहोदर
☞	लुप्त	+	उपमा	=	लुप्तोपमा
☞	मन्द	+	उदरी	=	मन्दोदरी
☞	अन्त्य	+	उदय	=	अन्त्योदय
☞	मद	+	उन्मत	=	मदोन्मत

☞	शंख	+	उदक	=	शंखोदक
☞	नर	+	उत्तम	=	नरोत्तम
☞	देव	+	उत्सव	=	देवोत्सव
☞	प्रश्न	+	उत्तर	=	प्रश्नोत्तर
☞	लोक	+	उक्ति	=	लोकोक्ति
☞	वीर	+	उचित	=	वीरोचित
☞	हित	+	उपदेश	=	हितोपदेश
☞	भाग्य	+	उदय	=	भाग्योदय
☞	अछूत	+	उद्धार	=	अछूतोद्धार
☞	पुरुष	+	उत्तम	=	पुरूषोत्तम
☞	उत्तर	+	उत्तर	=	उत्तरोत्तर
☞	देव	+	उपम	=	देवोपम
☞	लोक	+	उत्तर	=	लोकोत्तर
☞	प्रसव	+	उत्तर	=	प्रसवोत्तर
☞	गर्व	+	उन्नत	=	गर्वोन्नत
☞	मान	+	उन्नति	=	मानोन्नति
☞	शीत	+	उष्ण	=	शीतोष्ण
☞	सर्व	+	उपरि	=	सर्वोपरि
☞	प्र	+	उत्साह	=	प्रोत्साह
☞	प्र	+	उन्नत	=	प्रोन्नत
☞	आद्य	+	उपान्त	=	आद्योपान्त
☞	स	+	उत्साह	=	सोत्साह
☞	स	+	उपसर्ग	=	सोपसर्ग
☞	अछूत	+	उद्धार	=	अछूतोद्धार
☞	स्वातंत्र्य	+	उत्तर	=	स्वातंत्र्योत्तर
☞	दीर्घ	+	उपल	=	दीर्घोप
☞	रहस्य	+	उद्घाटन	=	रहस्योद्घाटन

☞	अतिशय	+	उक्ति	=	अतिशयोक्ति	☞	जल	+	उत्थान	=	जलोत्थान
☞	शास्त्र	+	उक्त	=	शास्त्रोक्ति	☞	नर	+	उत्तम	=	नरोत्तम
☞	समास	+	उक्ति	=	समासोक्ति	☞	नील	+	उत्पल	=	नीलोत्पल
☞	प्राप्त	+	उदक	=	प्राप्तोदक	☞	वेद	+	उक्त	=	वेदोक्त
☞	मन्त्र	+	उच्चार	=	मन्त्रोच्चार	☞	देश	+	उपकार	=	देशोपकार
☞	व्यंग्य	+	उक्ति	=	व्यंग्योक्ति	☞	स्व	+	उपार्जित	=	स्वोपार्जित
☞	लोक	+	उक्ति	=	लाकोक्ति	☞	परम	+	उत्सव	=	परमोत्सव
☞	अन्य	+	उक्ति	=	अन्योक्ति	☞	लोक	+	उपयोग	=	लोकोपयोग
☞	स	+	उपाधि	=	सोपाधि	☞	दर्प	+	उक्ति	=	दर्पोक्ति
☞	कठ	+	उपनिषद्	=	कठोपनिषद्	☞	अवसर	+	उचित	=	अवसरोचित
☞	छान्दोग्य	+	उपनिषद्	=	छान्दोग्योपनिषद्	☞	हिम	+	उपल	=	हिमोपल
☞	ईश	+	उपनिषद्	=	ईशोपनिषद्	☞	जीर्ण	+	उद्धार	=	जीर्णोद्धार
☞	आनन्द	+	उत्सव	=	आनन्दोत्सव	☞	आनन्द	+	उत्कर्ष	=	आनन्दोत्कर्ष
☞	पुष्प	+	उत्सव	=	पुष्पोत्सव	☞	भय	+	उत्पाद	=	भयोत्पाद
☞	मन्द	+	उदरी	=	मन्दोदरी	☞	रोग	+	उपचार	=	रोगोपचार
☞	वन्ध	+	उपाध्याय	=	वन्धोपाध्याय	☞	दुग्ध	+	उपजीवी	=	दुग्धजीवी
☞	निम्न	+	उक्ति	=	निम्नोक्ति	☞	जन	+	उपयोगी	=	जनोपयोगी
☞	फाग	+	उत्सव	=	फागोत्सव	☞	भाव	+	उद्दीप्त	=	भावोद्दीप्त
☞	जन्म	+	उत्सव	=	जन्मोत्सव	☞	मुण्डक	+	उपनिषद्	=	मुण्डकोपनिषद्
☞	दाम	+	उदर	=	दामोदर	☞	शंख	+	उदक	=	शंखोदक
☞	चट्ट	+	उपाध्याय	=	चट्टोपाध्याय	☞	अन्त्य	+	उदय	=	अन्त्योदय
☞	पूर्व	+	उल्लिखित	=	पूर्वोल्लिखित	☞	विकास	+	उन्मुख	=	विकासोन्मुख
☞	स	+	उदाहरण	=	सोदाहरण	☞	लुप्त	+	उपमा	=	लुप्तोपमा
☞	पूर्व	+	उत्तर	=	पूर्वोत्तर	☞	फल	+	उत्पत्ति	=	फलोत्पत्ति
☞	स्वभाव	+	उक्ति	=	स्वभावोक्ति	☞	फेन	+	उज्ज्वल	=	फेनोज्ज्वल
☞	कर्म	+	उन्मुख	=	कर्मोन्मुख	☞	पतन	+	उन्मुख	=	पतनोन्मुख
☞	क्रम	+	उन्नत	=	क्रमोन्न्त	☞	फल	+	उत्पत्ति	=	फलोत्पत्ति

☞ धीर + उद्धत = धीरोद्धत
☞ पतन + उन्मुख = पतनोन्मुख
☞ जल + उदर = जलोदर
☞ धर्म + उपदेश = धर्मोपदेश
☞ कर्ण + उचित = कर्णोचित
कथ + उपकथन = कथोपकथन
☞ दीर्घ + उपल = दीर्घोपल
☞ लम्ब + उदय = लम्बोदय
☞ मरण + उपरांत = मरणोपरांत
☞ दीप + उत्सव = दीपोत्सव
☞ ग्राम + उत्थान = ग्रामोत्थान
☞ चरण + उदक = चरणोदक
☞ प्र + उज्ज्वल = प्रज्ज्वल
☞ स + उदाहरण = सोदाहरण
☞ वैर + उद्धार = वैरोद्धार
☞ स्व + उपार्जित = स्वोपार्जित
☞ पश्चिम + उत्तर = पश्चिमोत्तर
☞ पुष्प + उपहार = पुष्पोहार
☞ शाक + उपजीवी = शाकोपजीवी
☞ भाव + उदय = भावोदय
☞ आद्य + उपांत = आद्योपांत
☞ नव + उदित = नवोदित
☞ प्राण + उत्सर्ग = प्राणोत्सर्ग
☞ सांग + उपांग = सांगोपांग
☞ रस + उत्पत्ति = रसोत्पत्ति
☞ चरम + उत्कृष्ट = चरमोत्कृष्ट
☞ चित्र + उपम = चित्रोपम

☞ मुख + उपाध्याय = मुखोपाध्याय
☞ यज्ञ + उपवीत = यज्ञोपवीत
☞ धीर + उदात्त = धीरोदात्त
☞ हर्ष + उल्लास = हर्षोल्लास
☞ मास + उत्तम = मासोत्तम
☞ दर्शन + उत्सुक = दर्शनोत्सुक
☞ उन्नत + उदर = उन्नतोदर
☞ पुष्प + उद्यान = पुष्पोद्यान
☞ मानव + उचित = मानवोचित
☞ दलित + उत्थान = दलितोत्थान
☞ भाव + उद्दीप्त = भावोद्दीप्त
☞ स + उल्लास = सोल्लास
☞ प्रवेश + उत्सव = प्रवेशोत्सव
☞ नव + उदय = नवोदय
☞ अर्थ + उपार्जन = अर्थोपार्जन
☞ आनन्द + उत्सव = आनन्दोत्सव
☞ डिम्ब + उद्घोष = डिम्बोद्घोष
☞ कर्ण + उद्धार = कर्णोद्धार
☞ खग + उद्धार = खगोद्धार

अ + ऊ = ओ

☞ जल + ऊर्मि = जलोर्मि
☞ नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा
☞ सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा
☞ जल + ऊर्जा = जलोर्जा
☞ प्र + ऊढ़ = प्रौढ़
☞ अक्ष + ऊंहिनी = अक्षौहिणी/अपवाद
☞ उच्च + ऊर्ध्व = उच्चोर्ध्व

☞ सूर्य + ऊर्जा = सूर्योर्जा

☞ चन्द्र + ऊर्ध्व = चन्द्रोर्ध्व

☞ समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि

☞ सागर + ऊर्मि = सागरोर्मि

☞ नव + ऊर्जा = नवोर्जा

☞ धारा + ऊष्ण = धारोष्ण

आ + उ = ओ

☞ महा + उदय = महोदय

☞ महा + उपाध्याय = महोपाध्याय

☞ महा + उपदेश = महोपदेश

☞ क्षुधा + उत्तेजन = क्षुधोत्तजन

☞ यथा + उचित = यथोचित

☞ महा + उत्सव = महोत्सव

☞ आत्मा + उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग

☞ गंगा + उदक = गंगोदक

☞ सिता + उपल = सितोपल

☞ महा + उरु = महोरू

☞ करूणा + उत्पादक = करूणोत्पादक

☞ महा + उद्यम = महोद्यम

☞ शारदा + उपासक = शारदोपासक

☞ माया + उपजात = मायोपजात

☞ सेवा + उपरांत = सेवोपरांत

☞ झण्डा + उत्तोलन = झण्डोत्तोलन

☞ चिन्ता + उन्मुक्त = चिन्तोन्मुख

☞ विद्या + उन्नति = विद्योन्नति

☞ आत्मा + उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग

☞ महा + उपदेशक = महोपदेशक

☞ महा + उद्यम = महोद्यम

☞ महा + उपकार = महोपकार

☞ गंगा + उपाध्याय = गंगोपाध्याय

☞ गंगा + उदक = गंगोदक

☞ सिता + उपल = सितोपल

☞ क्षुधा + उत्तेजन = क्षुधोत्तजन

☞ महा + उदधि = महोदधि

आ + ऊ = ओ

☞ महा + ऊर्मि = महोर्मि

☞ गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

☞ महा + ऊर्ध्व = महोर्ध्व

☞ महा + ऊर्जा = महोर्जा

☞ यमुना + ऊर्मि = यमुनोर्मि

☞ सरिता + ऊर्मि = सरितोर्मि

☞ यमुना + ऊष्मा = यमुनोष्मा

अ + ऋ = अर्

☞ सप्त + ऋषि = सप्तर्षि

☞ देव + ऋषि = देवर्षि

☞ भरत + ऋषभ = भरतर्षभ

☞ देव + ऋण = देवर्ण

☞ ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु

☞ राजा + ऋषि = राजर्षि

☞ साम + ऋचा = सामर्चा

☞ बसंत + ऋतु = बसंतर्तु

☞ उत्तम + ऋण = उत्तमर्ण

☞ परम + ऋत = परमर्त

☞ टकण्व + ऋषि = कण्वर्षि

आ	+	ऋ	=	अर्

- ☞ ब्रह्मा + ऋषि = ब्रह्मर्षि
- ☞ महा + ऋषि = महर्षि
- ☞ राजा + ऋषि = राजर्षि
- ☞ वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु
- ☞ महा + ऋद्धि = महर्द्धि
- ☞ महा + ऋण = महर्ण

अ/आ	+	लृ	=	अल्

- ☞ तव + लृकार = तवल्कार

- **गुण संधि के अपवाद:**

- ☞ प्र + ऊढ़ = प्रौढ़
- ☞ अक्ष + ऊहिणी = अक्षौहिणी
- ☞ सुख + ऋतु = सुखार्तु
- ☞ स्व + ईरिणी = स्वैरिणी
- ☞ स्व + ईर = स्वैर
- ☞ दरा + ऋण = दशार्ण

❖ **वृद्धि संधि :**

- यदि अ,आ के बाद **ए, ऐ** आए तो **'ऐ'** तथा अ, आ के बाद **ओ, औ आए** तो 'औ' हो जाता है। **ऐ** तथा **औ स्वर** वृद्धि स्वर कहलाते है अत: यह संधि वृद्धि संधि कहलाती है।

- **अ, आ के साथ ए से आने पर**

अ	+	ए	=	ऐ

- ☞ हित + एषी = हितैषी
- ☞ प्रिय + एषी = प्रियैषी
- ☞ धन + एषी = धनैषी
- ☞ शुभ + एषी = शुभैषी
- ☞ एक + एक = एकैक
- ☞ पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा
- ☞ छात्र + एकता = छात्रैकता
- ☞ लोक + एषणा = लोकैषणा
- ☞ वित्त + एषणा = वित्तैषणा
- ☞ अद्य + एवं = अद्यैवं
- ☞ मत + एकता = मतैकता
- ☞ धन + एषणा = धनैषणा
- ☞ विश्व + एकता = विश्वैकता
- ☞ एक + एकश: = एकैकश:
- ☞ वित्त + एषणा = वित्तैषणा

अ	+	ऐ	=	ऐ

- ☞ मत + ऐक्य = मतैक्य
- ☞ विचार + ऐक्य = विचारैक्य
- ☞ धन + ऐक्य = धनैक्य
- ☞ नव + ऐश्वर्य = नवैश्वर्य
- ☞ धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य
- ☞ विश्व + ऐक्य = विश्वैक्य
- ☞ स्व + ऐच्छिक = स्वैच्छिक
- ☞ देव + ऐश्वर्य = देवैश्वर्य
- ☞ परम + ऐन्द्रजालिक= परमैन्द्रजालिक
- ☞ ज्ञान + ऐश्वर्य = ज्ञानैश्वर्य
- ☞ जन + ऐश्वर्य = जनैश्वर्य
- ☞ धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
- ☞ राज + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य

आ + ए = ऐ

☞ सदा + एव = सदैव

☞ तथा + एव = तथैव

☞ वसुधा + एव = वसुधैव

☞ यथा + एव = यथैव

☞ महा + एषणा = महैषणा

आ + ऐ = ऐ

☞ महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

☞ टिका + ऐत = टिकैत

☞ गंगा + ऐश्वर्य = गंगैश्वर्य

☞ महा + ऐन्द्रजालिक= महैन्द्रजालिक

☞ राजा + ऐक्य = राजैक्य

☞ राका + ऐश्वर्य = राकैश्वर्य

☞ राजा + ऐश्वर्य = राजैश्वर्य

☞ रमा + ऐक्य = रमैक्य

अ + ओ = औ

☞ जल + ओघ = जलौघ

☞ परम + ओजस्वी = परमौजस्वी

☞ बिंब + ओष्ठ = बिंबोष्ठ

☞ जल + ओक = जलौक

☞ अधर + ओष्ठ = अधरौष्ठ (अपवाद)

☞ दूध + ओदन = दूधौदन

☞ शुद्ध + ओदन = शुद्धौदन (अपवाद)

☞ दंत + ओष्ठ्य = दंतोष्ठ्य (अपवाद)

☞ परम + ओज = परमौज

☞ घृत + ओदन = घृतौदन

☞ अरण्य + ओक = अरण्यौक

☞ जल + ओकस = जलौकस

अ + औ = औ

☞ वन + औषध = वनौषध

☞ परम + औषध = परमौषध

☞ प्र + औद्योगिकी= प्रौद्योगिकी

☞ मंत्र + औषधि = मंत्रौषधि

☞ जल + औषधि = जलौषधि

☞ परम + औदार्य = परमौदार्य

☞ मिलन + औचित्य = मिलनौचित्य

☞ देव + औदार्य = देवौदार्य

☞ अत्यंत + औदार्य = अत्यंतौदार्य

☞ तप + औदार्य = तपौदार्य

☞ भाव + औचित्य = भावौचित्य

☞ भाव + औदार्य = भावौदार्य

☞ दीव्य + औषधि = दीव्यौषधि

☞ पूर्व + औपनिवेशिक= पूर्वौपनिवेशिक

☞ मिलन + औचित्य = मिलनौचित्य

☞ परम + औपचारिक= परमौपचारिक

☞ जल + औध = जलौघ

☞ वीर + औदार्य = वीरौदार्य

आ + ओ = औ

☞ महा + ओजस्वी = महौजस्वी

☞ गंगा + ओक = गंगौक

☞ अहा + ओज = अहौज

☞ जला + ओख = जलौख

☞ महा + ओषधि = महौषधि

☞ नर्मदा + ओघ = नर्मदौघ

☞ राजा + ओक = राजौक

☞ गंगा	+	ओघ	=	गंगौघ
☞ प्रपा	+	ओक	=	प्रपौक
☞ यमुना	+	ओज	=	यमुनौज
☞ महा	+	ओज	=	महौज
☞ महा	+	ओषधि	=	महौषधि
☞ महा	+	ओघ	=	महौघ

आ + औ = औ

☞ महा	+	औदार्य	=	महौदार्य
☞ मृदा	+	औषधि	=	मृदौषधि
☞ वृथा	+	औदार्य	=	वृथौदार्य
☞ यथा	+	औचित्य	=	यथौचित्य
☞ महा	+	औषध	=	महौषध
☞ राका	+	औन्नत्य	=	राकौन्नत्य
☞ गंगा	+	औचित्य	=	गंगौचित्य
☞ गंगा	+	औदार्य	=	गंगौदार्य
☞ गृह	+	औत्सुक्य	=	गृहौत्सुक्य
☞ वसुधा	+	एव	=	वसुधैव

❖ यण् संधि :

- इ/ ई के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो इ, ई के स्थान पर य्, उ/ ऊ के बाद कोई भिन्न स्वर हो, तो उ, ऊ के स्थान पर व्, ऋ के बाद भिन्न स्वर हो तो ऋ के स्थान पर र् हो जाता है। लृ, लॄ के स्थान पर ल् हो जाता है।

1. इ, ई = य

इ + असमान स्वर = य

☞ यदि	+	अपि	=	यद्यपि
☞ अति	+	आचार	=	अत्याचार
☞ नि	+	ऊन	=	न्यून
☞ नि	+	अस्त	=	न्यस्त
☞ त्रि	+	अंबक	=	त्र्यंबक
☞ प्रति	+	अंचा	=	प्रत्यंचा
☞ वि	+	अग्र	=	व्यग्र
☞ प्रति	+	अर्पण	=	प्रत्यर्पण
☞ अति	+	आवश्यक	=	अत्यावश्यक
☞ नि	+	आय	=	न्याय
☞ वि	+	आप्त	=	व्याप्त
☞ प्रति	+	अपकार	=	प्रत्यपकार
☞ अभि	+	आगत	=	अभ्यागत
☞ अति	+	अंत	=	अत्यंत
☞ प्रति	+	उत्तर	=	प्रत्युत्तर
☞ परि	+	उषण	=	पर्युषण
☞ अभि	+	उदय	=	अभ्युदय
☞ वि	+	उत्पत्ति	=	व्युत्पत्ति
☞ वि	+	ऊह	=	व्यूह
☞ प्रति	+	ऊह	=	प्रव्यूह
☞ प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
☞ अभि	+	अर्थी	=	अभ्यर्थी
☞ त्रि	+	अक्षर	=	त्र्यक्षर
☞ परि	+	अटन	=	पर्यटन
☞ स्वस्ति	+	अयन	=	स्वस्त्ययन
☞ प्रति	+	अंतर	=	प्रत्यंतर
☞ गति	+	अवरोध	=	गत्यवरोध
☞ राशि	+	अंतरण	=	राश्यंतरण
☞ बुद्धि	+	अनुसार	=	बुद्ध्यनुसार
☞ परि	+	अवसान	=	पर्यवसान
☞ प्रति	+	अय	=	प्रत्यय

☞ द्वि + अर्थी = द्व्यर्थी
☞ परि + अंक = पर्यंक
☞ परि + अंत = पर्यंत
☞ प्रति + अंचा = प्रत्यंचा
☞ अधि + अक्ष = अध्यक्ष
☞ अधि + अयन = अध्ययन
☞ नि + अस्त = न्यस्त
☞ वि + अंजन = व्यंजन
☞ वि + अष्टि = व्यष्टि
☞ वि + असन = व्यसन
☞ वि + अवहार = व्यवहार
☞ विधि + अनुकूल = विध्यनुकूल
☞ रीति + अनुसार = रीत्यानुसार
☞ ध्वनि + अर्थ = ध्वनार्थ
☞ अति + अल्प = अत्यल्प
☞ आदि + अंत = आद्यन्त
☞ प्रति + अपकार = प्रत्यपकार
☞ वृद्धि + आदेश = वृध्द्यादेश
☞ हरि + अंक = हर्यंक
☞ विधि + अर्थ = विध्यर्थ
☞ त्रि + अर्थी = त्र्यर्थी
☞ वि + अर्थ = व्यर्थ
☞ वि + अक्त = व्यक्त
☞ इति + अलम् = इत्यलम्
☞ वि + अभिचार = व्यभिचार
☞ वि + अय = व्यय
☞ प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण

☞ वि + अष्टि = व्यष्टि
☞ वि + अग्र = व्यग्र
☞ परि + अवेक्षण = पर्यवेक्षण
☞ परि + अटक = पर्यटक
☞ प्रति + अभिज्ञ = प्रत्यभिज्ञ
☞ आदि + अंत = आद्यंत
☞ अदा + अंत = अद्यांत
☞ अधि + अक्षर = अध्यक्षर
☞ मति + अनुसार = मत्यानुसार
☞ गति + अनुसार = गत्यानुसार
☞ अभि + अर्थना = अभ्यर्थना
☞ परि + अवसान = पर्यवसान
☞ अति + ओज = अत्योज
☞ अति + औदार्य = अत्यौदार्य
☞ गति + अनुसार = गत्यनुसार
☞ जाति + अभिमान = जात्याभिमान
☞ इति + अर्थ = इत्यार्थ
☞ गति + अवरोध = गत्यावरोध
☞ अभि + अर्थी = अभ्यार्थी
☞ अधि + आपक = अध्यापक
☞ परि + आवरण = पर्यावरण
☞ नि + आय = न्याय
☞ इति + आदि = इत्यादि
☞ अति + आवश्यक = अत्यावश्यक
☞ अग्नि + आशय = अग्नाशय
☞ वि + आघात = व्याघात
☞ वि + आयाम = व्यायाम

☞	वि	+	आस	=	व्यास
☞	वि	+	आख्यान	=	व्याख्यान
☞	वि	+	आकरण	=	व्याकरण
☞	वि	+	आप्त	=	व्याप्त
☞	वि	+	आकुल	=	व्याकुल
☞	प्रति	+	आरोपण	=	प्रत्यारोपण
☞	प्रति	+	आवर्तन	=	प्रत्यावर्तन
☞	वि	+	आवर्तन	=	व्यावर्तन
☞	प्रति	+	आभूति	=	प्रत्याभूति
☞	प्रति	+	आशित	=	प्रत्याशित
☞	प्रति	+	आख्यान	=	प्रत्याख्यान
☞	अति	+	आचार	=	अत्याचार
☞	परि	+	आप्त	=	पर्याप्त
☞	परि	+	आय	=	पर्याय
☞	नि	+	आस	=	न्यास
☞	इति	+	आदि	=	इत्यादि
☞	ध्वनि	+	आत्मक	=	ध्वन्यात्मक
☞	अभि	+	आस	=	अभ्यास
☞	अधि	+	आपक	=	अध्यापक
☞	अधि	+	आय	=	अध्याय
☞	प्रति	+	आशी	=	प्रत्याशी
☞	प्राप्ति	+	आशा	=	प्राप्त्याशा
☞	अति	+	आवश्यक	=	अत्यावश्यक
☞	अभि	+	आगत	=	अभ्यागत
☞	अधि	+	आत्म	=	अध्यात्म
☞	अधि	+	आदेश	=	अध्यादेश
☞	परि	+	आवरण	=	पर्यावरण
☞	शक्ति	+	आराधना	=	शक्त्याराधना
☞	अति	+	आनन्द	=	अत्यानन्द
☞	उपरि	+	उक्त	=	उपर्युक्त
☞	अभि	+	उत्थान	=	अभ्युत्थान
☞	प्रति	+	उपकार	=	प्रत्युपकार
☞	प्रति	+	उत्तर	=	प्रत्युत्तर
☞	प्रति	+	उत्पन्न	=	प्रत्युत्पन्न
☞	प्रति	+	उत्	=	प्रत्युत्
☞	अभि	+	उदय	=	अभ्युदय
☞	अति	+	उक्ति	=	अत्युक्ति
☞	अति	+	उत्तम	=	अत्युत्तम
☞	वि	+	उत्पत्ति	=	व्युत्पत्ति
☞	नि	+	उपकार	=	न्युपकार
☞	आदि	+	उपांत	=	आद्युपांत
☞	अति	+	उष्ण	=	अत्युष्ण
☞	परि	+	उषण	=	पर्युषण
☞	प्रति	+	ऊह	=	प्रत्यूह
☞	वाणि	+	ऊर्मि	=	वाण्योर्मि
☞	अति	+	ऊर्ध्व	=	अत्योर्ध्व
☞	प्रति	+	ऊष	=	प्रत्यूष
☞	ध्वनि	+	आलोक	=	ध्वन्यालोक
☞	प्रति	+	आरोपण	=	प्रत्यारोपण
☞	वि	+	आवर्तन	=	व्यावर्तन
☞	वि	+	आधि	=	व्याधि
☞	अति	+	ऊष्मा	=	अत्योष्मा
☞	अति	+	ऐश्वर्य	=	अत्येश्वर्य
☞	अधि	+	एता	=	अध्येता

ई	+	असमान स्वर = य्

☞	नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण
☞	देवी	+	अर्पण	=	देव्यर्पण
☞	मही	+	आधार	=	मह्याधार
☞	नारी	+	उचित	=	नार्योचित
☞	वाणी	+	औचित्य	=	वाण्यौचित्य
☞	स्त्री	+	उचित	=	स्त्र्युचित
☞	पृथिवी	+	आधार	=	पृथिव्याधार
☞	सखी	+	आगमन	=	सख्यागमन
☞	नदी	+	आमुख	=	नद्यामुख
☞	देवी	+	उदय	=	देव्युदय
☞	नारी	+	उत्थान	=	नार्युत्थान
☞	नदी	+	ऊर्मि	=	नद्यर्मि
☞	सखी	+	ऐक्य	=	सख्यैक्य
☞	देवी	+	अर्चना	=	देव्यर्चना
☞	देवी	+	आलय	=	देव्यालय
☞	सरस्वती	+	आराधन	=	सरस्वत्याराधन
☞	सखी	+	उचित	=	सख्युचित
☞	नदी	+	ऊर्मि	=	नद्युर्मि
☞	नदी	+	उद्‌गम	=	नद्युद्‌गम
☞	स्त्री	+	उपयोगी	=	स्त्र्योपयोगी
☞	नदी	+	अर्पण	=	नद्यार्पण
☞	नदी	+	अर्चना	=	नद्‌र्चना
☞	देवी	+	आगमन	=	देव्यागमन
☞	नदी	+	आमुख	=	नद्यामुख
☞	सुधी	+	उपास्य	=	सुध्युपास्य
☞	नारी	+	उत्थान	=	नार्युद्‌धार
☞	अति	+	ओज	=	अत्योज
☞	दधि	+	ओदन	=	दध्योदन
☞	अति	+	औदार्य	=	अत्युदार्य/अत्योदार्य
☞	अति	+	औचित्य	=	अत्यौचित्य

2. उ/ऊ + असमान स्वर = व्

उ	+	असमान स्वर = व्

☞	सु	+	अल्प	=	स्वल्प
☞	अनु	+	अय	=	अन्वय
☞	मधु	+	अरि	=	मध्वरि
☞	तनु	+	अंगी	=	तन्वंगी
☞	सु	+	अच्छ	=	स्वच्छ
☞	समनु	+	अय	=	समन्वय
☞	मनु	+	अंतर	=	मन्वंतर
☞	सु	+	अस्ति	=	स्वस्ति
☞	शिशु	+	अंग	=	शिश्वंग
☞	सिन्धु	+	अर्चना	=	सिध्वर्चना
☞	सु	+	आगत	=	स्वागत
☞	लघु	+	आदि	=	लघ्वादि
☞	गुरु	+	आज्ञा	=	गुर्वाज्ञा
☞	प्रभु	+	आदेश	=	प्रभ्वादेश
☞	गुरु	+	आदेश	=	गुर्वादेश
☞	धातु	+	इक	=	धात्विक
☞	अनु	+	इष्ट	=	अन्विष्ट
☞	अनु	+	इति	=	अन्विति
☞	अनु	+	ईक्षा	=	अन्वीक्षा
☞	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
☞	लघु	+	ओष्ठ	=	लघ्वोष्ठ

☞ अनु + एक्षक = अन्वेक्षक

☞ साधु + ई = साध्वी

☞ भानु + आगमन = भान्वागमन

☞ मधु + आचार्य = मध्वाचार्य

☞ सु + अस्ति = स्वस्ति

☞ तनु + अंगी = तन्वंगी

☞ अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण

☞ साधु + आचार = साध्वाचार

☞ मधु + आलय = मध्वालय

☞ साधु + आगमन = साध्वागमन

☞ प्रभु + आंगन = प्रभ्वांगन

☞ चमू + अंग = चम्वंग

☞ वधू + आगमन = वध्वागमन

☞ चमू + आक्रमण = चम्वाक्रमण

☞ अनु + इष्ट = अन्विष्ट

☞ धातु + इक = धात्विक

☞ वधु + इच्छा = वध्विच्छा

ऊ + असमान स्वर = व्

☞ वधू + अर्थ = अध्वर्थ

☞ वधू + आगमन = वध्वागमन

☞ वधू + ऐश्वर्य = वध्वैश्वर्य

☞ वधू + इष्ट = वध्विष्ट

☞ भू + आदि = भ्वादि

☞ भू + अर्थ = भ्वार्थ

☞ सू + आदेश = स्वादेश

☞ प्रतिभू + आगति = प्रतिभ्वागति

☞ वधू + ईर्ष्या = वध्वीर्ष्या

3. ऋ + असमान स्वर = र्

ऋ + असमान स्वर = र्

☞ पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

☞ पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

☞ मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा

☞ भ्रातृ + आगमन = भ्रात्रागमन

☞ पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश

☞ स्वस्तृ + अनुमति = स्वस्त्रनुमति

☞ श्रोतृ + उत्सुकता = श्रात्रुत्सकता

☞ दातृ + उदारता = दात्रुदारता

☞ नेतृ + ऐश्वर्य = नेत्रैश्वर्य

☞ वक्तृ + उद्बोधन = वक्त्रुद्बोधन

☞ पितृ + आलय = पित्रालय

☞ स्वस्तृ + इच्छा = स्वस्त्रेच्छा

☞ स्वस्तृ + अनुमति = स्वस्त्रेनुमति

☞ भ्रातृ + उत्कण्ठा = भ्रात्रोत्कण्ठा

☞ दातृ + उदारता = दात्रोदारता

☞ श्रौतृ + उत्सुकता = श्रौतोत्सुकता

☞ वक्तृ + उद्बोधन = वक्तोृद्बोधन

☞ लृ + आकृति = लाकृति

☞ लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ

☞ वधू + अर्थ = वध्वार्थ

☞ वधू + आगमन = वध्वागमन

☞ पितृ + उपदेश = पित्रोपदेश

☞ अनु + एषक = अन्वेषक

☞ भ्रातृ + आज्ञा = भ्रात्राज्ञा

☞ मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश

☞ पितृ + अनुमति = पित्रानुमति

☞ पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

☞ लृ + ओटा = लोटा

❖ अयादि संधि :

- इसके अन्तर्गत यदि ए को बाद असमान स्वर हो तो **'ए'** का **'अय्'**, ऐ के बाद असमान स्वर हो तो **'ऐ'** का **'आय्'** ओ के बाद यदि असमान स्वर हो तो **'ओ'** का **'अव्'** औ के बाद यदि असमान स्वर हो तो **'औ'** का **'आव्'** हो जाता है।

☞ ए + असमान स्वर = अय्

☞ ऐ + असमान स्वर = आय्

☞ ओ + असमान स्वर = अव्

☞ औ + असमान स्वर = आव्

ए + असमान स्वर = अय्

☞ ने + अन = नयन

☞ शे + अन = शयन

☞ विजे + ई = विजयी

☞ प्रले + अ = प्रलय

☞ संचे + अ = संचय

☞ चे + अन = चयन

☞ ले + अ = लय

☞ जे + अ = जय

☞ विले + अ = विलय

☞ विने + अ = विनय

☞ जे + अन = जयन

☞ ले + अन = लयन

☞ ने + अ = नय

☞ विजे + अ = विजय

ऐ + असमान स्वर = आय्

☞ नै + अक = नायक

☞ विधै + इका = विधायिका

☞ गै + इका = गायिका

☞ सै + अक = सायक

☞ गै + अक = गायक

☞ पै + अक = पायक

☞ दै + इनी = दायिनी

☞ सहै + अक = सहायक

☞ विनै + अक = विनायक

☞ दै + अक = दायक

☞ सहै + अक = सहायक

☞ गै + अन = गायन

☞ शै + अक = शायक

☞ नै + इका = नायिका

☞ शै + इका = शायिका

ओ + असमान स्वर = अव्

☞ गो + अक्ष = गवाक्ष (गवक्ष)

☞ भो + अन = भवन

☞ पो + अन = पवन

☞ भो + अति = भवति

☞ गो + ईश = गवीश

☞ भो + अ = भव

☞ भो + इष्य = भविष्य

☞ वटो + ऋक्ष = वटवृक्ष

☞ गो + एषणा = गवेषणा

☞ शो + अ = शव

☞ हो + इ = हवि

☞ पो + इत्र = पवित्र

☞ विभो + अ = विभव

☞ प्रसो + अ = प्रसव

☞ यो + अन = यवन

☞ हो + अन = हवन

☞ गो + अ = गव्य

☞ गो + एषणा = गवेषणा

☞ गो + अक्ष = गवाक्ष

☞ नो + ईन = नवीन

☞ लो + अन = लवन

☞ यो + अन = यवन

औ + असमान स्वर = आव्

☞ पौ + अक = पावक

☞ भौ + अक = भावक

☞ श्रौ + अक = श्रावक

☞ भौ + अना = भावना

☞ स्त्रौ + अ = स्त्राव

☞ धौ + इका = धाविका

☞ प्रसौ + इक = प्रसाविका

☞ शौ + अक = शावक

☞ नौ + इक = नाविक

☞ भौ + उक = भावुक

☞ भौ + अ = भाव

☞ श्रौ + अन = श्रावण

☞ पौ + अन = पावन

☞ नौ + अ = नाव

☞ प्रसौ + इका = प्रसाविका

☞ भौ + ई = भावी

☞ स्त्रौ + इक = स्त्राविक

☞ भौ + अन = भावन

☞ विशो + आमित्र = विश्वामित्र

व्यञ्जन संधि

- संधि का वह भेद जिसमें परस्पर दो वर्णः

♦ स्वर + व्यञ्जन

♦ व्यञ्जन + व्यञ्जन

♦ व्यञ्जन + स्वर का मेल हो वहाँ व्यञ्जन संधि होती है।

- **नियम-1:** यदि पदान्त क, च, ट, त, प में से किसी वर्ण के बाद कोई सघोष व्यञ्जन (पंचमाक्षरों को छोड़कर) अथवा कोई स्वर हो तो पदान्त क, च, ट, त, प के स्थान पर क्रमशः ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जायेगा।

- प्रथम वर्ण का तृतीय वर्ण हो जायेगा।

☞ ऋक् + वेद = ऋग्वेद

☞ उत् + घाटन = उद्घाटन

☞ पंच् + आब = पंजाब

☞ षट् + दर्शन = षड्दर्शन

☞ अप् + ज = अब्ज

☞ अप् + द = अब्द

☞ दिक् + विजय = दिग्विजय

☞ दिक् + अम्बर = दिगम्बर

☞ वाक् + ईश = वागीश

☞ वणिक् + वर्ग = वणिग्वर्ग

☞ प्राक् + ऐतिहासिक= प्रागैतिहासिक

☞ अच् + अन्त = अजन्त

☞ अच् + आदि = आजादि

☞ षट् + आनन = षडानन

☞ षट् + यन्त्र = षड्यन्त्र

☞ सत् + आचार = सदाचार

☞	उत्	+	यान	=	उद्यान
☞	तत्	+	उपरान्त	=	तदुपरान्त
☞	सत्	+	आशय	=	सदाशय
☞	तत्	+	अनन्तर	=	तदनन्तर
☞	जगत्	+	अम्बा	=	जगदम्बा
☞	जगत्	+	ईश	=	जगदीश
☞	सुप्	+	अन्त	=	सुबन्त
☞	कृत्	+	अन्त	=	कृदन्त
☞	उत्	+	अय	=	उदय
☞	वाक्	+	दान	=	वाग्दान
☞	तत्	+	रूप	=	तद्रूप
☞	महत्	+	अर्थ	=	महदर्थ
☞	उत्	+	भव	=	उद्भव
☞	जयत्	+	रथ	=	जयद्रथ
☞	तत्	+	भव	=	तद्भव
☞	दिक्	+	भ्रम	=	दिग्भ्रम
☞	वाक्	+	जाल	=	वाग्जाल
☞	दिक्	+	अंचल	=	दिगंचल
☞	षट्	+	अक्षर	=	षडक्षर
☞	वृहत्	+	आकार	=	वृहदाकार
☞	भवत्	+	ध्यान	=	भवद्ध्यान
☞	सत्	+	वस्तु	=	सद्वस्तु
☞	भवत्	+	ईय	=	भवदीय
☞	अप्	+	ईंधन	=	अबींधन
☞	उत्	+	दाम	=	उद्दाम
☞	अत्	+	आदि	=	अदादि
☞	दिक्	+	अंत	=	दिगंत
☞	दृक्	+	अंचल	=	दृगंचल
☞	वाक्	+	ईश्वरी	=	वागीश्वरी
☞	दिक्	+	गयंद	=	दिग्गयंद
☞	दिक्	+	गज	=	दिग्गज
☞	सम्यक्	+	ज्ञान	=	सम्यग्ज्ञान
☞	वाक्	+	जड़ता	=	वाग्जड़ता
☞	दिक्	+	ज्ञान	=	दिग्ज्ञान
☞	वाक्	+	दत्ता	=	वाग्दत्ता
☞	वाक्	+	दंड	=	वाग्दंड
☞	दिक्	+	दर्शन	=	दिग्दर्शन
☞	दिक्	+	दिगंत	=	दिग्दिगंत
☞	वाक्	+	देवी	=	वाग्देवी
☞	वाक्	+	दुष्ट	=	वाग्दुष्ट
☞	दिक्	+	भ्रम	=	दिग्भ्रम
☞	दिक्	+	वधू	=	दिग्वधू
☞	वाक्	+	व्यापार	=	वाग्व्यापार
☞	दिक्	+	विजय	=	दिग्विजय
☞	वाक्	+	वैभव	=	वाग्वैभव
☞	वाक्	+	वितंड	=	वाग्वितंड
☞	वाक्	+	विलास	=	वाग्विलास
☞	वाक्	+	वज्र	=	वाग्वज्र
☞	वाक्	+	विदग्धता	=	वाग्विदग्धता
☞	दिक्	+	हस्ती	=	दिग्हस्ती
☞	वाक्	+	हरि	=	वाग्हरि
☞	अच्	+	अंत	=	अजंत
☞	णिच्	+	अंत	=	णिजंत
☞	षट्	+	अंग	=	षड़ंग

☞ षट् + अभिज्ञ = षडभिज्ञ
☞ षट् + अक्षर = षड्क्षर
☞ षट् + गुण = षड्गुण
☞ षट् + दर्शन = षड्दर्शन
☞ षट् + भुजा = षड्भुजा
☞ षट् + रस = षड्रस
☞ षट् + राग = षड्राग
☞ चित् + अणु = चिदणु
☞ महत् + अर्थ = महदर्थ
☞ जगत् + अंबा = जगदंबा
☞ वृहत् + आरण्यक = वृहदारण्यक
☞ वृहत् + आकार = वृहदाकार
☞ सत् + आनन्द = सदानन्द
☞ सत् + आचार = सदाचार
☞ चित् + आकार = चिदाकार
☞ वृहत + आकाश = वृहदाकाश
☞ सत् + आशय = सदाशय
☞ सत् + आत्मा = सदात्मा
☞ चित् + आकाश = चिदाकाश
☞ सच्चित् + आनंद = सच्चिदानंद
☞ जगत् + आत्मा = जगदात्मा
☞ महत् + आकाश = महदाकाश
☞ जगत् + आनंद = जगदानंद
☞ जगत् + आलोक = जगदालोक
☞ जगत् + आचार्य = जगदाचार्य
☞ सत् + इच्छा = सदिच्छा
☞ महत् + इच्छा = महदिच्छा

☞ जगत् + ईश = जगदीश
☞ सत् + उपयोग = सदुपयोग
☞ सत् + उपदेश = सदुपदेश
☞ सत् + गति = सद्गति
☞ जगत् + गुरु = जगद्गुरु
☞ सत् + गुण = सद्गुण
☞ भगवत् + गीता = भगवद्गीता
☞ पोत् + दार = पोद्दार
☞ सत् + धर्म = सद्धर्म
☞ विद्युत + ध्वज = विद्युद्ध्वज
☞ भगवत् + ध्यान = भगवद्ध्यान
☞ साक्षात् + धर्म = साक्षाद्धर्म
☞ सत् + बुद्धि = सद्बुद्धि
☞ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति
☞ सत् + भाव = सद्भाव
☞ श्रीमत् + भागवत = श्रीमद्भागवत
☞ सत् + रूप = सद्रूप
☞ चित् + रूप = चिद्रूप
☞ पश्चात् + वर्ती = पश्चाद्वर्ती
☞ चित् + विलास = चिद्विलास
☞ सत् + वेग = सद्वेग
☞ सत् + व्यवहार = सद्व्यवहार
☞ सत् + वस्तु = सद्वस्तु
☞ सत् + वंश = सद्वंश
☞ सत् + विवेक = सद्विवेक
☞ भगवत् + विग्रह = भगवद्विग्रह
☞ स्यात् + वाद = स्याद्वाद

☞ तिप् + अंत = तिबंत

☞ अप् + द = अब्द

☞ शरद् + काल = शरत्काल

☞ आपद् + काल = आपात्काल

☞ विपद् + काल = विपत्काल

☞ तद् + काल = तत्काल

☞ उद् + कट = उत्कट

☞ उद् + कृष्ट = उत्कृष्ट

☞ उपनिषद् + कथा = उपनिषत्कथा

☞ उद् + क्षिप्त = उत्क्षिप्त

☞ उपनिषद् + काल = उपनिषत्काल

☞ उद् + तप्त = उत्तप्त

☞ उद् + ताप = उत्ताप

☞ उद् + तम = उत्तम

☞ उद् + तीर्ण = उत्तीर्ण

☞ उद् + तेजक = उत्तेजक

☞ मृद् + तिका = मृत्तिका

☞ आपद् + ति = आपत्ति

☞ विपद् + ति = विपत्ति

☞ उद् + तर = उत्तर

☞ उद् + स्थान = उत्थान

☞ तद् + पर = तत्पर

☞ उद् + पन्न = उत्पन्न

☞ मृद् + पात्र = मृत्पात्र

☞ तद् + परायण = तत्परायण

☞ तद् + पुरुष = तत्पुरुष

☞ उद् + साह = उत्साह

☞ उद् + सर्ग = उत्सर्ग

☞ तद् + सम = तत्सम

☞ संसद् + सदस्य = संसत्सदस्य

☞ संसद् + सत्र = संसत्सत्र

☞ उद् + सव = उत्सव

☞ वाक् + निपुण = वाङ्निपुण

☞ दिक् + नाग = दिङ्नाग

☞ दिक् + नाथ = दिङ्नाथ

☞ वाक् + मय = वाङ्मय

☞ दिक् + मूढ़ = दिङ्मूढ़

☞ दिक् + मंडल = दिङ्मंडल

☞ ऋक् + मंत्र = ऋङ्मंत्र

☞ दिक् + मुख = दिङ्मुख

☞ षट् + मास = षण्मास

☞ षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति

☞ षट् + मातुर = षण्मातुर

☞ षट् + मुख = षण्मुख

☞ बृहत् + नल = बृहन्नल

☞ बृहत् + नेत्र = बृहन्नेत्र

☞ सत् + निधि = सन्निधि

☞ जगत् + नाथ = जगन्नाथ

☞ जगत् + नियंता = जगन्नियंता

☞ श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण

☞ भवत् + निष्ठ = भवन्निष्ठ

☞ सत् + नारी = सन्नारी

☞ सत् + नियम = सन्नियम

☞ सत् + निधान = सन्निधान

☞ जगत् + निवास = जगन्निवास
☞ जगत् + मोहिनी = जगन्मोहिनी
☞ बृहत् + माला = बृहन्माला
☞ सत् + मान = सम्मान/सन्मान
☞ चित् + मय = चिन्मय
☞ विद्युत + माला = विद्युन्माला
☞ सत् + मार्ग = सन्मार्ग
☞ जगत् + माता = जगन्माता
☞ पद् + नग = पन्नग
☞ उद् + निद्र = उन्निद्र
☞ उद् + नत = उन्नत
☞ उद् + नयन = उन्नयन
☞ उद् + मत = उन्मत
☞ उद् + मन = उन्मन
☞ उद् + माद = उन्माद
☞ तद् + मात्र = तन्मात्र
☞ उद् + मेष = उन्मेष
☞ उद् + मुख = उन्मुख
☞ उद् + मीलन = उन्मीलन
☞ उद् + मूलन = उन्मूलन
☞ उद् + मोचन = उन्मोचन
☞ तद् + मय = तन्मय
☞ शरद् + महोत्सव = शरन्महोत्सव
☞ मृद् + मूर्ति = मृण्मूर्ति
☞ मृद् + मय = मृण्मय
☞ मृद् + मयी = मृण्मयी
☞ अलम् + कृति = अलङ्कृति

☞ अलम् + कृत = अलङ्कृत
☞ शम् + कर = शङ्कर
☞ अहम् + कार = अहङ्कार
☞ सम् + कल्प = सङ्कल्प
☞ अलम् + करण = अलङ्करण
☞ किम् + कर = किङ्कर
☞ दीपम् + कर = दीपङ्कर
☞ सम् + क्रान्ति = सङ्क्रान्ति
☞ भयम् + कर = भयङ्कर
☞ तीर्थम् + कर = तीर्थङ्कर
☞ शुभम् + कर = शुभङ्कर
☞ सम् + गम = सङ्गम (संगम)
☞ सम् + गत = सङ्गत (संगत)
☞ सम् + गठन = सङ्गठन(संगठन)
☞ हृदयम् + गम = हृदयङ्गम
☞ दिवम् + गत = दिवङ्गत
☞ अस्तम् + गत = अस्तङ्गत
☞ सम् + गति = सङ्गति (संगति)
☞ सम् + घटन = सङ्घटन
☞ सम् + घनन = सङ्घनन
☞ सम् + घात = सङ्घात
☞ सम् + चालन = सञ्चालन
☞ अकिम् + चन = अञ्किचन
☞ सम् + चित = सञ्चित
☞ चिरम् + जीवी = चिरञ्जीवी
☞ सम् + ज्ञा = संज्ञा
☞ धनम् + जय = धनञ्जय

☞ सम् + जीवनी = सञ्जीवनी
☞ दम् + ड = दण्ड
☞ सम् + तोष = सन्तोष
☞ परम् + तु = परन्तु
☞ सम् + दिग्ध = सन्दिग्ध
☞ सम् + देश = सन्देश
☞ सम् + तति = सन्तति
☞ चिरम् + तन = चिरन्तन
☞ सम् + त्रास = सन्त्रास
☞ सम् + ताप = सन्ताप
☞ सम् + द्रवण = सन्द्रवण
☞ धुरम् + धर = धुरन्धर
☞ सम् + धान = सन्धान
☞ सम् + धि = सन्धि
☞ सम् + निवेश = सन्निवेश
☞ सम् + निहित = सन्निहित
☞ सम् + न्यासी = सन्न्यासी
☞ सम् + नद्ध = सन्नद्ध
☞ सम् + निकट = सन्निकट
☞ किम् + नर = किन्नर
☞ सम् + शय = संशय
☞ सम् + सर्ग = संसर्ग
☞ सम् + यम = संयम
☞ किम् + वदंती = किंवदंती
☞ स्वयम् + वर = स्वयंवर
☞ सम् + लाप = संलाप

☞ सम् + विधान = संविधान
☞ सम् + वर्धन = संवर्धन
☞ सम् + लग्न = संलग्न
☞ सम् + रक्षक = संरक्षक
☞ सम् + सार = संसार
☞ सम् + योग = संयोग
☞ सम् + स्मरण = संस्मरण
☞ किम् + वा = किंवा
☞ सम् + शोधन = संशोधन
☞ सम् + वाद = संवाद
☞ सम् + सृति = संसृति
☞ सम् + हार = संहार
☞ सत् + चरित्र = सच्चरित्र
☞ उद् + चारण = उच्चारण
☞ उद् + चाटन = उच्चाटन
☞ समुद् + चय = समुच्चय
☞ सत् + चिदानंद = सच्चिदानंद
☞ उद् + छिन्न = उच्छिन्न
☞ उद् + छेद = उच्छेद
☞ उद् + छादन = उच्छादन
☞ जगत् + जननी = जगज्जननी
☞ सत् + जन = सज्जन
☞ तद् + जनित = तज्जनित/तज्जन्य
☞ विपद् + जाल = विपज्जाल
☞ उद् + जयिनी = उज्जयिनी
☞ जड़ित + ज्योति = तड़िज्ज्योति

☞ यावत् + जीवन = यावज्जीवन

☞ बृहत् + जन = बृहज्जन

☞ उद् + ज्वल = उज्ज्वल

☞ तद् + जनित = तज्जनित

☞ बृहत् + टीका = बृहट्टिका

☞ उद् + डयन = उड्डयन

☞ उत् + अय = उदय

☞ कृत् + अन्त = कृदन्त

☞ सुप + अन्त = सुबन्त

☞ वाक् + दत्त = वाग्दत्त

☞ वाक् + जाल = वाग्जाल

☞ उत् + घाटन = उद्घाटन

☞ सत् + वंश = सद्वंश

☞ उत् + योग = उद्योग

☞ **नोटः** इस नियम के कई उपनियम होते हैं जिनको दो नियम (नियम+उपनियम) एक-दूसरे को काट रहे तो वरीयता उपनियम को मिलेगी।

♦ **नियम-2:** यदि पदान्त त के परे त+ल्, ज्, न्, ड्, 'त' च् में से कोई एक वर्ण हो तो 'त' के स्थान पर वही वर्ण आ जायेगा जो 'त' के परे (बाद) है। अर्थात्

त+ल्, त+ज्, त+न्, त+ड्, त+ट्, त+च्

ल् ज् न् ङ् ट् च्

त + ल् = ल्

☞ उत् + लास = उल्लास

☞ पत् + लव = वल्लव

☞ तत् + लीन = तल्लीन

☞ उत् + लेख = उल्लेख

☞ मत् + लय = मल्लय

☞ उत + लंघन = उल्लंघन

☞ तड़ित् + लेखा = तड़िल्लेखा

☞ शरत् + लास = शरल्लास

☞ विपत् + लीन = विपल्लीन

☞ उद् + लिखित = उल्लिखित

☞ विद्युत + लेखा = विद्युल्लेखा

त + ज् = ज्

☞ उत् + ज्वल = उज्ज्वल

☞ सत् + जन = सज्जन

☞ बृहत् + जन = बृहज्जन

☞ तत् + जन्य = तज्जन्य

☞ तड़ित् + ज्योति = तड़िज्ज्योति

☞ उत् + जयिनि = उज्जयिनि

त् + न् = न्

☞ उत् + नत = उन्नत

☞ उत् + नयन = उन्नयन

☞ सुत् + नति = सुन्नति

☞ उत् + नति = उन्नति

☞ जगत् + नाथ = जगन्नाथ

☞ श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण

☞ उत् + नाव = उन्नाव

त् + ड् = ड्

☞ उत् + डयन = उड्डयन

☞ उत् + डीयते = उड्डीयते

त् + ट = ट्

☞ तत् + टीका = तट्टीका

☞ वृहत् + टिट्ठिभि = वृहट्टिट्टिभि

☞ मत् + टीका = मट्टीका

त् + च = च्

☞ उत् + चारण = उच्चारण

☞ उत् + चाटन = उच्चाटन

☞ समुत + चय = समुच्चय

☞ सत् + चिदानंद = सच्चिदानंद

☞ सत् + चरित्र = सच्चरितत्र

♦ **नियम-3:** यदि पदान्त 'त' के परे 'ह' हो तो 'त' के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जायेगा।

☞ उत्(उद्) + हार = उद्धार

☞ उत् (उद्) + हरण = उद्धरण

☞ तत् (तद्) + हित = उद्धित

☞ उत् (उद्) + हृत = उद्धृत

☞ पत् (पद्) + हति = पद्धति/पद्धति

☞ तद् + हित = तद्धित

♦ **नियम-4:** यदि पदान्त 'त' (द) के परे 'श' हो तो 'त' (द) के स्थान पर 'च' और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जायेगा।

☞ उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

☞ उत् + श्वास = उच्छ्वास

☞ उत् (उद्) + शास्त्र = उच्छास्त्र

☞ सत् + शात्र = सच्छास्त्र

☞ उत् (उद्) + श्वसन = उच्छ्वसन

☞ उत् (उद्) + श्रृंखल = उच्छृंखल

☞ श्रीमत् + शंकराचार्य= श्रीमच्छंकराचार्य

☞ श्रीमत् + शरतचंद = श्रीमच्छरतचंद

☞ शरत् + शशि = शरच्छशि

☞ जगत् + शांति = जगच्छांति

☞ सत् + शासन = सच्छासन

☞ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

♦ **नियम-5:** यदि पदान्त किसी स्वर के परे 'छ' हो तो 'छ' से पूर्व 'च्' का आगम हो जायेगा।

☞ अनु + छेद = अनुच्छेद

☞ स्व + छंद = स्वच्छंद

☞ प्रति + छाया = प्रतिच्छाया

☞ आ + छादन = आच्छादन

☞ परि + छेद = परिच्छेद

☞ तरू + छाया = तरूच्छाया

☞ वि + छिन्न = विच्छिन्न

☞ वि + छेद = विच्छेद

☞ मातृ + छाया = मातृच्छाया

☞ उ + छेद = उच्छेद

☞ उ + छिन्न = उच्छिन्न

☞ उ + छवास = उच्छवास

☞ पद + छेद = पदच्छेद

☞ अंग + छेद = अंगच्छेद

☞ वि + छेद = विच्छेद

☞ परि + छेद = परिच्छेद

☞ दंत + छद = दंतच्छद

☞ प्र + छन्न = प्रच्छन्न

☞ रद + छद = रदच्छद

☞ अप + छाया = अपच्छाया

☞ छत्र + छाया = छत्रच्छाया

☞ प्रति + छवि = प्रतिच्छवि

☞ अनु + छेद = अनुच्छेद

☞ अंग + छद = अंगच्छद

☞ आ + छन्न = आच्छन्न

♦ **नियम-6:** यदि पदान्त अ, आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के परे 'स' हो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जायेगा।

☞ परि	+	सद्	=	परिषद्
☞ सु	+	समा	=	सुषमा
☞ सु	+	स्मिता	=	सुष्मिता
☞ अभि	+	सेक	=	अभिषेक
☞ सु	+	सुम्ना	=	सुषुम्ना
☞ नि	+	सेध	=	निषेध
☞ वसि	+	स्ठ	=	वसिष्ठ
☞ नि	+	सिद्ध	=	निषिद्ध
☞ नि	+	सेध	=	निषेध
☞ नि	+	स्नात	=	निष्णात
☞ वि	+	सन्न	=	विषण्ण
☞ वि	+	साद	=	विषाद
☞ नि	+	साद	=	निषाद
☞ नि	+	स्थुर	=	निष्ठुर
☞ नि	+	सन्न	=	निषण्ण
☞ नि	+	संग	=	निषंग
☞ दुस्	+	कर्म	=	दुष्कर्म
☞ दुस्	+	काल	=	दुष्काल
☞ निस्	+	कपट	=	निष्कपट
☞ निस्	+	क्रिय	=	निष्क्रिय
☞ निस्	+	कर्ष	=	निष्कर्ष
☞ निस्	+	कलुष	=	निष्कलुष
☞ निस्	+	क्रमण	=	निष्क्रमण
☞ निस्	+	कासन	=	निष्कासन
☞ निस्	+	कलंक	=	निष्कलंक
☞ निस्	+	काम	=	निष्काम
☞ निस्	+	कंटक	=	निष्कंटक
☞ दुस्	+	कृत्य	=	दुष्कृत्य
☞ दुस्	+	कर	=	दुष्कर
☞ दुस्	+	फल	=	दुष्फल
☞ निस्	+	पादन	=	निष्पादन
☞ दुस्	+	प्रहार	=	दुष्प्रहार
☞ दुस्	+	पाच्य	=	दुष्पाच्य
☞ निस्	+	पलक	=	निष्पलक
☞ निस्	+	प्रभ	=	निष्प्रभ
☞ निस्	+	फल	=	निष्फल
☞ निस्	+	पंक	=	निष्पंक
☞ निस्	+	पाप	=	निष्पाप
☞ निस्	+	पन्न	=	निष्पन्न
☞ दुस्	+	परिणाम	=	दुष्परिणाम
☞ दुस्	+	प्रचार	=	दुष्प्रचार
☞ निस्	+	प्रयोजन	=	निष्प्रयोजन
☞ निस्	+	पत्ति	=	निष्पत्ति
☞ निस्	+	पक्ष	=	निष्पक्ष
☞ निस्	+	प्राण	=	निष्प्राण

♦ **नियम-7:** यदि पदान्त क, च, ट, त, प में से किसी वर्ण के परे कोई पंचमाक्षर हो तो क, च, ट, त, प के स्थान पर उसी वर्ग का पंचमाक्षर हो जायेगा। **क, च, ट, त, प** के स्थान पर **ङ, ञ ण न म्** हो जायेगा।

☞ वृहत्	+	माला	=	वृहन्माला
☞ वृहत्	+	नेत्र	=	वृहन्नेत्र

☞ षट् + मातुर = षण्मातुर

☞ अप् + मय = अम्मय

☞ तत् + मय = तन्मय

☞ सत् + मति = सन्मति

☞ सप् + मान = सम्मान

☞ सत् + मार्ग = सन्मार्ग

♦ **नियम-8:** यदि पदान्त 'द' के परे क, ख, त, थ, प्, फ्, स् में से एक वर्ण हो तो पदान्त 'द' के स्थान पर 'त' हो जायेगा।

☞ उद् + कल = उत्कल

☞ उद् + थान = उत्थान

☞ उद् + कोच = उत्कोच

☞ उद् + ताल = उत्ताल

☞ उद् + तुंग = उत्तुंग

♦ **नियम-9:** यदि पदान्त किसी पंचमाक्षर के परे क, च, त, प वर्ग का कोई व्यञ्जन हो, तो पंचमाक्षर के स्थान पर पंचमाक्षर के परे आये हुए व्यञ्जन के वर्ग का पंचमाक्षर हो जायेगा।

☞ झम् + डा = झण्डा

☞ सन् + चय = संचय

☞ **नोट:** विकल्प से पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग हो जायेगा।

अपवाद:-

☞ सम् + न्यासी = सन्न्यासी

☞ सम् + न्यास = सन्यास

☞ सम् + भ्रांत = सम्भ्रान्त

☞ सम् + मोहन = सम्मोहन

♦ **नियम-10:** यदि पदान्त किसी पंचमाक्षर के परे य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्, क्ष्, त्र्, ज्ञ हो तो पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग हो जायेगा।

☞ सम् + रचना = संरचना

☞ सम् + यंत्र = संयंत्र

☞ सम् + हार = संहार

☞ सम् + लाप = संलाप

☞ सम् + त्रास = संत्रास

☞ सम् + वेदना = संवेदना

☞ सम् + योग = संयोग

☞ सम् + शय = संशय

♦ **नियम-11:** यदि पदान्त परि/सम के बाद कृ धातु से बना हुआ कोई शबद हो तो पदान्त 'परि' के बाद 'ष्' तथा पदान्त 'सम्' के बाद 'स' हो जायेगा। कृ धातु से बने शब्द कृति, कृत, कार, कारक, कारण, करण, कार्य आदि।

☞ परि + कृत = परिष्कृत

☞ परि + कार = परिष्कार

☞ परि + कृति = परिष्कृति

☞ परि + कार्य = परिष्कार्य

☞ सम् + करण = संस्करण

☞ सम् + कृत = संस्कृत

☞ सम् + कार = संस्कार

☞ सम् + कृति = संस्कृति

☞ सम् + कृत = संस्कृत

☞ सम् + कार = संस्कार

☞ सम् + करण = संस्करण

☞ सम् + कर्ता = संस्कर्ता

♦ **नियम-12:** यदि ऋ, र्, ष् के बाद में क वर्ग, प वर्ग, य्, र्, ल्, व् या कोई स्वर हो और उसके बाद 'न' हो तो 'न' का 'ण' हो जाता है।

ऋ	-	क वर्ग	
र्	-	प वर्ग	→ न् = ण्
ष्	-	य, र, ल, या स्वर	

☞ ऋ + न = ऋण
☞ प्र + न = प्रण
☞ रा + ना = राणा
☞ परि + नति = परिणति
☞ शूर्प + नख = शूर्पनखा
☞ विष् + नु = विष्णु
☞ तृष् + ना = तृष्णा
☞ विष् + नु = विष्णु
☞ कृष् + न = कृष्ण
☞ पुरा + न = पुराण
☞ उष् + न = उष्ण

♦ **नियम-13:** यदि पदान्त इ/ई, उ/ऊ, ए/ऐ, ष् के परे स्थ्, स्न् त्, थ्, हो तो इनके स्थान पर क्रमश: ष्ठ;, ष्ण्, ट्, ण, हो जायेगा।

☞ इ/ई + स्थ् = ष्ठ्
☞ उ/ऊ + स्न् = ष्ण्
☞ ए/ऐ + त् = ट्
☞ ष् + थ् = ण्
☞ युधि + स्थिर = युधिष्ठर
☞ नि + स्थुर = निष्ठुर
☞ अधि + स्थाता = अधिष्ठाता
☞ प्रति + स्था = प्रतिष्ठा
☞ तुष् + त = तुष्ट
☞ षष् + थ = षष्ण
☞ सृष् + ति = सृष्टि
☞ दुष् + त = दुष्ट
☞ प्रति + स्थापन = प्रतिष्ठापन

☞ वि + सम = विषम
☞ वि + स्था = विष्ठा
☞ नि + संग = निषंग
☞ अभि + सेक = अभिषेक
☞ परि + सद् = परिषद्
☞ उपनि + सद् = उपनिषद्
☞ प्रति + सेध = प्रतिषेध
☞ अधि + स्थान = अधिष्ठान
☞ नि + स्था = निष्ठा
☞ सु + सुप्त = निषुप्त
☞ सु + समा = सुष्मा
☞ सु + स्मिता = सुष्मिता
☞ अनु + संगी = अनुषंगी
☞ अनु + स्थान = अनुष्ठान
☞ आकृष् + त = आकृष्ट
☞ उत्कृष् + त = उत्कृष्ट
☞ षष् + ति = षष्टि
☞ इष् + त = इष्ट
☞ पुष् + त = पुष्ट
☞ तुष् + त = तुष्ट
☞ हृष् + त = हृष्ट
☞ निकृष् + त = निकृष्ट
☞ षष् + थ = षष्ठ

♦ **नियम-14:** संस्कृत भाषा के यौगिक शब्दों के अन्त में 'न' लगा हो तो उसका लोप हो जाताहै, यौगिक शब्द (न्) + कोई भी शब्द

☞ प्राणिन + मात्र = प्राणिमात्र
☞ हस्तिन् + दंत = हस्तिदंत

☞ आत्मन् + विश्वास = आत्मविश्वास

☞ योगिन् + ईश्वर = योगीश्वर

☞ पक्षिन् + राज = पक्षिराज

☞ पक्षिन् + गण = पक्षिगण

☞ सन्यासिन्+ वर्ग = सन्यासीवर्ग

☞ युवन् + अवस्था = युवाअवस्था

☞ प्राणिन् + विज्ञान = प्राणीविज्ञान

☞ राजन् + गृह = राजगृह

☞ स्वामिन् + भक्त = स्वामीभक्त

☞ मंत्रिन् + मंडल = मंत्रिमंडल

☞ आत्मन् + हंता = आत्महंता

☞ युवन् + राज = युवराज

☞ युवन् + वाणी = युवावाणी

☞ युवन् + आचार्य = युवाचार्य

☞ राजन् + ऋषि = राजर्षि

♦ **नियम :15**-यदि प्रथम पद के रूप में 'अहन्' शब्द हो तो अहन् के स्थान पर 'अहर' हो जायेगा, परन्तु 'अहन्' के बाद 'र' वर्ण हो ताक न्काउ हो जायेगा।

☞ अहन् + र = अहड

☞ अहन् + मुख = अहर्मुख

☞ अहन् + गण = अहर्गण

☞ अहन् + रात्र = अहोरात्र

उदाहरण :-

☞ मनस् + ईष = मनीष

☞ मनस् + ईषा = मनीषा

☞ निर + रोग = नीरोग

☞ दुर् + राज = दूराज

☞ निर् + रव = नीरव

☞ निर् + रंध्र = नीरंध्र

☞ निर् + रस = नीरस

☞ अंतर् + पुर = अंत:पुर

☞ अंतर् + स्त्राव = अंत:स्त्राव

☞ पुनर् + प्राप्ति = पुन:प्राप्ति

☞ पुनर् + प्रेषण = पुन:प्रेषण

☞ पुनर् + प्रसारण = पुन:प्रसारण

☞ अंतर् + कथा = अंत:कथा

☞ अंतर् + क्रिया = अंत:क्रिया

☞ अंतर् + चेतना = अंतश्चेतना

☞ अंतर् + करण = अंत:करण

☞ पुनर् + च = पुनश्च

☞ पुनर् + चर्वण = पुनश्चर्वण

☞ अंतर् + ताप = अंतस्ताप

☞ अंतर् + तल = अंतस्तल

☞ पुनर् + संस्कार = पुन:संस्कार

☞ अंतर् + सलिला = अंतस्सलिला

☞ पुनर् + संभव = पुन:संभव

☞ पुनर् + संधान = पुन:संधान

☞ अहन् + रात्रि = अहोरात्र

☞ अहन् + रूप = अहोरूप

अहर् + निशा = अहर्निश

☞ अहन् + मुख = अहर्मुख

☞ अहन् + अहन् = अहरह

☞ सम् + आचार = समाचार

☞ एवं + अस्तु = एवमस्तु

☞	स्वयं	+	एव	=	स्वयमेव
☞	सं	+	हार	=	संहार
☞	अप	+	मय	=	अम्मय
☞	वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
☞	सम्	+	क्षेप	=	संक्षेप
☞	विपद्	+	जाल	=	विपज्जाल
☞	सत्	+	चित्	=	सच्चित्
☞	सत्	+	छात्र	=	सच्छात्र
☞	तत्	+	टीका	=	तट्टीका
☞	प्राक्	+	हरण	=	प्राग्हरण
☞	वाक्	+	हरि	=	वाग्हरि
☞	जगत	+	माता	=	जगन्माता
☞	उत्	+	नायक	=	उन्नायक
☞	विद्वत	+	मण्डली	=	विद्धमण्डली
☞	सम्	+	लग्न	=	संलग्न
☞	सम	+	योजना	=	संयोजना
☞	सम्	+	सर्ग	=	संसर्ग
☞	वृहत्	+	चयन	=	वृहच्चयन
☞	विद्युत्	+	छटा	=	विद्युच्छटा
☞	वृहत्	+	झंकार	=	वृहज्झंकार
☞	भवत्	+	डमरू	=	भवड्डमरू
☞	शरत्	+	शशि	=	शरच्छशि
☞	शाला	+	छादन	=	शालाच्छादन
☞	एक	+	छत्र	=	एकच्छत्र
☞	वाग्	+	हरि	=	वाग्हरि
☞	प्राक्	+	हरण	=	प्राग्घरण

☞	वाक्	+	दुष्ट	=	वाग्दुष्ट
☞	तत्	+	रूप	=	तद्रूप
☞	स्यात्	+	वाद	=	स्याद्वाद
☞	पश्चात्	+	वर्ती	=	पश्चाद्वर्ती
☞	वृहत्	+	टिट्टिभि	=	वृहट्टिट्टिभि
☞	सगुन्	+	णाम	=	सगुण्णाम
☞	उत्	+	नाव	=	उन्नाव
☞	मत्	+	लय	=	मल्लय
☞	उत्	+	निद्र	=	उन्निद्र
☞	सत्	+	नियम	=	सन्नियम
☞	चिरम्	+	तन	=	चिरन्तन
☞	उद्	+	फुल्ल	=	उत्फुल्ल
☞	लक्ष्मी	+	छाया	=	लक्ष्मीच्छाया
☞	परमे	+	स्थी	=	परमेष्ठी
☞	नै	+	स्थिक	=	नैष्ठिक
☞	व्र	+	न	=	व्रण
☞	शूर्प	+	नखा	=	शूर्पनखा
☞	नार	+	अयन	=	नारायण
☞	पुरा	+	न	=	पुराण
☞	शोष्	+	अन	=	शोषण
☞	दूष्	+	अन	=	दूषण
☞	पोष्	+	अन	=	पोषण
☞	नि	+	संग	=	निषंग
☞	परि	+	सद्	=	परिषद्
☞	सु	+	सुप्ति	=	सुषुप्ति

विसर्ग सन्धि

- वह ध्वनि विकार जो परस्पर दो वर्णों के (स्वर या व्यञ्जन) मेल से उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

♦ **नियम-:** यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में कोई सघोष/घोष (वर्ग का 3, 4, 5 वाँ वर्ण) 'ओ' में बदल जाता है।

☞ मन: + ज = मनोज

☞ तप: + वन = तपोवन

☞ मन: + रथ = मनोरथ

☞ वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध

☞ यश: + दा = यशोदा

☞ मन: + अभिलाषा = मनोभिलाषा

☞ सर: + कार = सरोज

☞ विन: + द = विनोद

☞ यश: + धरा = यशोधरा

☞ अध: + मुख = अधोमुख

☞ मन: + नयन = मनोनयन

☞ मन: + विकार = मनोविकार

☞ अध: + वस्त्र = अधोवस्त्र

☞ मन: + हर = मनोहर

☞ पुर: + हित = पुरोहित

☞ तप: + भूमि = तपोभूमि

☞ मन: + अनुकूल = मनोनुकूल

☞ सर: + ज = सरोकार

☞ मन: + हारी = मनोहारी

☞ सर्वत + मुखी = सर्वतोमुखी

☞ यश: + गाथा = यशोगाथा

☞ तप: + बल = तपोबल

☞ अध: + हस्ताक्षरकर्ता= अधोहस्ताक्षरकर्ता

☞ मन: + मालिन्य = मनोमालिन्य

☞ अध: + गामी = अधोगामी

☞ मन: + योग = मनोयोग

☞ मन: + नीत = मनोनीत

☞ मन: + बल = मनोबल

☞ तप: + वन = तपोवन

☞ मन: + दशा = मनोदशा

☞ मन: + हर = मनोहर

☞ मन: + विज्ञान = मनोविज्ञान

☞ मन: + भव = मनोभव

☞ पय: + निधि = पयोनिधि

☞ मन: + नयन = मनोनयन

☞ पय: + धर = पयोधर

☞ पय: + धि = पयोधि

☞ मन: + भव = मनोभव

☞ पय: + निधि = पयोनिधि

☞ मन: + वेग = मनोवेग

☞ पय: + द = पयोद

☞ मन: + व्यथा = मनोव्यथा

☞ यश: + वर्मा = यशोवर्मा

☞ मन: + गत = मनोगत

☞ मन: + रंजन = मनोरंजन

☞ अध: + भाग = अधोभाग

☞ पुर: + धा = पुरोधा

☞ अध: + लिखित = अधोलिखित

☞ शिर: + धार्य = शिरोधार्य

☞ तिर: + हित = तिरोहित

☞ पुर: + हित = पुरोहित

☞ शिर: + रेखा = शिरोरेखा

☞ तम: + गुण = तमोगुण

☞ रज: + दर्शन = रजोदर्शन

☞ रज: + गुण = रजोगुण

☞ मन: + ज्ञ = मनोज्ञ

☞ मन: + विचार = मनोविचार

☞ मन: + योग = मनोयोग

☞ तेज: + राशि = तेजोराशि

☞ यश: + गान = यशोगान

☞ वक्ष: + ज = वक्षोज

☞ दिव: + ज्योति = दिवाज्योति

☞ तेज: + पुंज = तेजपुंज

☞ अध: + लोक = अधोलोक

☞ नभ: + मंडल = नभोमंडल

☞ पुर: + गामी = पुरोगामी

☞ मन: + भावना = मनोभावना

☞ पय: + ज = पयोज

☞ यश: + भूमि = यशोभूमि

☞ तेज: + रूप = तेजोरूप

☞ तप: + भूमि = तपोभूमि

☞ तिर: + भाव = तिरोभाव

☞ मन: + विनोद = मनोविनोद

☞ यश: + धरा = यशोधरा

☞ तप: + धन = तपोधन

☞ तिर: + हित = तिरोहित

☞ तिर: + भूत = तिरोभूत

☞ अध: + भूमि = अधाभूमि

☞ मन: + मय = मनोमय

☞ शिर: + भूषण = शिरोभूषण

☞ सर: + वर = सरोवर

☞ यश: + वर्धन = यशोवर्धन

☞ सर: + रूह = सरोरूह

☞ मन: + मंथन = मनोमंथन

☞ मन: + ग्राह्य = मनोग्राह्य

☞ वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध

☞ तिर: + गुण = तिरोगुण

☞ तप: + मय = तपोमय

☞ शिर: + भाग = शिरोभाग

☞ मन: + वांछा = मनोवांछा

☞ मन: + रोग = मनोरोग

☞ तेज: + मय = तेजोमय

☞ तेज: + मूर्ति = तेजोमूर्ति

☞ शिर: + मणि = शिरोमणि

☞ तम: + गुण = तमोगुण

☞ तिर: + धान = तिरोधान

☞ अंतत: + गत्वा = अंततोगत्वा

☞ उर: + ज = उरोज

☞ **नोट:** पुन: और अंत: की संरचना में विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जायेगा।

☞ पुन: + जन्म = पुनर्जन्म

☞ अंत: + धान = अंतर्धान

प्रज्ञान

♦ **नियम-2:** यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर कोइ दूसरा स्वर आए और विसर्ग के परे सघोष/घोष (तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण) व्यञ्जन अथवा य्, व्, ल् कोई एक वर्ण अथवा कोई स्वर हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र' का आगम हो जायेगा।

अ/आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के परे हो तो

विसर्ग (:) + सघोष व्यञ्जन (3, 4, 5) य्, व्, ल् या स्वर = र्।

☞ निः + धन = निर्धन

☞ बहिः + गमन = बहिर्गमन

☞ निः + अंजन = निरंजन

☞ निः + दोष = निर्दोष

☞ निः + उद्देश्य = निरूद्देश्य

☞ दुः + गुण = दुर्गुण

☞ दुः + दिन = दुर्दिन

☞ आशीः + वाद = आशीर्वाद

☞ यजुः + वेद = यजुर्वेद

☞ दुः + आत्मा = दुरात्मा

☞ धनुः + धर = धनुर्धर

☞ प्रादुः + भाव = प्रादुर्भाव

☞ निः + आशा = निराशा

☞ बहिः + आगत = बहिरागत

☞ चतुः + भुज = चतुर्भुज

♦ **नियम-3:** यदि पदान्त किसी स्वर के परे विसर्ग हो और विसर्ग (:) के परे श्, ष्, स् में से एक वर्ण हो तो पदान्त विसर्ग (:) के स्थान पर वहीं वर्ण आ जायेगा जो विसर्ग के परे हैं।

स्वर:+श् = श्, स्वर:+ष् = ष्, स्वर:+स् = स्।

☞ निः + शुल्क = निश्शुल्क

☞ निः + साहस = निस्साहस

☞ निः + षेध = निष्षेध

☞ दुः + शासन = दुश्शासन

☞ दुः + शील = दुश्शील

☞ निः + संदेश = निस्संदेह

☞ दुः + साहस = दुस्साहस

☞ दुः + स्वप्न = दुस्स्वप्न

☞ निः + चल = निश्चल

☞ धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

☞ दुः + चरित्र = दुश्चरित्र

☞ निः + चिन्त = निश्चिंत

☞ निः + छल = निश्छल

☞ निः + तारण = निश्तारण

☞ निः + तार = निस्तार

☞ युधिः + ठिर = युधिष्ठिर

☞ दुः + तर = दुस्तर

☞ चतुः + पर = चतुष्पद

☞ बहिः + कार = बहिष्कार

☞ चतुः + काष्ठ = चतुष्काष्ठ

☞ निः + करूण = निष्करूण

☞ धनुः + खण्ड = धनुष्खण्ड

☞ दुः + ट = दुष्ट

☞ दुः + परिणाम = दुष्परिणाम

☞ दुः + काल = दुष्काल

☞ निः + फल = निष्फल

☞ निः + पक्ष = निष्पक्ष

☞ निः + ठुर = निष्ठुर

☞	नि:	+	ठ	=	निष्ठ
☞	न:	+	काम	=	निष्काम
☞	बहि:	+	कृत	=	बहिष्कृत
☞	आवि:	+	कार	=	आविष्कार
☞	दु:	+	कर्म	=	दुष्कर्म
☞	चतु:	+	पाद	=	चतुष्पद
☞	नि:	+	कर्मण	=	निष्कर्मण
☞	नि:	+	कंटक	=	निष्कंटक
☞	दु:	+	थकार	=	दुश्थकार
☞	हरि:	+	चन्द्र	=	हरिश्चन्द्र
☞	धनु:	+	पाणि	=	धनुष्पाणि
☞	पु:	+	कर	=	पुष्कर
☞	दु:	+	कर	=	दुष्कर
☞	चतु:	+	कोण	=	चतुष्कोण
☞	नि:	+	पाप	=	निष्पाप
☞	नि:	+	कपट	=	निष्कपट
☞	वि:	+	स्थापित	=	विस्थापित
☞	नि:	+	चय	=	निश्चय
☞	नि:	+	तन्द्र	=	निश्तन्द्र
☞	नि:	+	तेज	=	निस्तेज
☞	वि:	+	तृत	=	विस्तृत
☞	वि:	+	तार	=	विस्तार
☞	वि:	+	तीर्ण	=	विस्तीर्ण
☞	चतु:	+	पथ	=	चतुष्पथ
☞	चतु:	+	कोण	=	चतुष्कोण
☞	नि:	+	शांत	=	निस्शांत
☞	नि:	+	सार	=	निस्सार

☞	दु:	+	शासन	=	दुश्शासन
☞	नि:	+	शब्द	=	निश्शब्द
☞	नि:	+	संकोच	=	निस्संकोच
☞	नि:	+	सृत	=	निस्सृत
☞	दु:	+	शील	=	दुश्शील
☞	दु:	+	साहस	=	दुस्साहस
☞	यश:	+	शरीर	=	यश्शरीर
☞	दु:	+	स्वप्न	=	दुस्स्वप्न
☞	पुन:	+	शांत	=	पुनश्शांत
☞	वय:	+	षष्ठी	=	वयष्षष्ठी
☞	राम:	+	षष्ठी	=	रामषष्ठी
☞	नि:	+	संदेह	=	निस्संदेह
☞	मन:	+	संताप	=	मनस्संताप
☞	नि:	+	सरण	=	निस्सरण
☞	नि:	+	सर्ग	=	निस्सर्ग
☞	नम:	+	शिवाय	=	नमश्शिवाय
☞	पुन:	+	स्मरण	=	पुनस्स्मरण
☞	नि:	+	शास्त्र	=	निश्शास्त्र
☞	नि:	+	संतान	=	निस्संतान
☞	नि:	+	शंक	=	निश्शंक
☞	अंत:	+	शक्ति	=	अंतश्शक्ति
☞	दु:	+	साध्य	=	दुस्साध्य
☞	नि:	+	संज्ञ	=	निस्संज्ञ
☞	नि:	+	शत्रु	=	निश्शत्रु
☞	यश:	+	शेष	=	यशशेष
☞	नि:	+	शुल्क	=	निश्शुल्क
☞	नि:	+	संतान	=	निस्संतान

☞	यशः	+	शरीर	=	यश्शरीर	☞	दुः	+	बोध	=	दुर्बोध
☞	निः	+	गम	=	निर्गम	☞	दुः	+	दिन	=	दुर्दिन
☞	निः	+	बाध	=	निर्बाध	☞	दुः	+	वचन	=	दुर्वचन
☞	निः	+	दोष	=	निर्दोष	☞	दुः	+	व्यवस्था	=	दुर्व्यवस्था
☞	निः	+	गमन	=	निर्गमन	☞	दुः	+	अभिसंधि	=	दुराभिसंधि
☞	दुः	+	दशा	=	दुर्दशा	☞	बहिः	+	आगमन	=	बहिरागमन
☞	निः	+	गुण	=	निर्गुण	☞	बहिः	+	गमन	=	बहिर्गमन
☞	निः	+	वचन	=	निर्वचन	☞	प्रादुः	+	भूत	=	प्रादुर्भत
☞	निः	+	जन	=	निर्जन	☞	बहिः	+	भाग	=	बहिर्भाग
☞	निः	+	भय	=	निर्भय	☞	दुः	+	गुण	=	दुर्गुण
☞	निः	+	लिप्त	=	निर्लिप्त	☞	दुः	+	धर्म	=	दुर्धर्म
☞	निः	+	मल	=	निर्मल	☞	दुः	+	बुद्धि	=	दुर्बुद्धि
☞	निः	+	उपाय	=	निरूपाय	☞	दुः+यः	+	धन	=	दुर्योधन
☞	निः	+	उपम	=	निरूपम	☞	दुः	+	मति	=	दुर्मति
☞	निः	+	अर्थक	=	निर्रथक	☞	दुः	+	भावना	=	दुर्भावना
☞	निः	+	उद्देश्य	=	निरूद्देश्य	☞	आवि	+	भाव	=	आविर्भाव
☞	निः	+	आधार	=	निराधार	☞	चतुः	+	दिक्	=	चतुर्दिक
☞	निः	+	वचन	=	निर्वचन	☞	दुः	+	आशा	=	दुर्आशा
☞	निः	+	जन	=	निर्जन	☞	दुः	+	ग	=	दुर्ग
☞	निः	+	लज्ज	=	निर्लज्ज	☞	दुः	+	गति	=	दुर्गति
☞	निः	+	झर	=	निर्झर	☞	दुः	+	आचार	=	दुराचार
☞	निः	+	धन	=	निर्धन	☞	निः	+	विघ्न	=	निर्विघ्न
☞	निः	+	आशा	=	निराशा	☞	निः	+	धन	=	निर्धन
☞	निः	+	अपेक्ष	=	निराक्षेप	☞	निः	+	जन	=	निर्जन
☞	निः	+	अपराध	=	निरापराध	☞	निः	+	बल	=	निर्बल
☞	निः	+	आकार	=	निराकार	☞	दुः	+	भाग्य	=	दुर्भाग्य
☞	दुः	+	गम	=	दुर्गम	☞	दुः	+	गंध	=	दुर्गन्ध

प्रज्ञान

☞ दुः + उपयोग = दुरूपयोग
☞ यजुः + वेद = यजुर्वेद
☞ आविः + भूत = आविर्भूत
☞ बहिः + मुखी = बहिर्मुखी
☞ बहिः + द्वन्द्व = बहिर्द्वन्द्व
☞ प्रादुः + भाव = प्रादुर्भाव
☞ बहिः + द्वार = बहिर्द्वार
☞ बहिः + आक्रमण = बहिराक्रमण
☞ पुनः + उक्ति = पुनरूक्ति
☞ धनुः + ज्ञान = धनुर्ज्ञान
☞ आयुः + वेद = आयुर्वेद
☞ आशीः + वचन = आशीर्वचन
☞ बहिः + अंग = बहिर्अंग
☞ आशीः + वाद = आशीर्वाद
☞ ज्योति + विद = ज्योतिर्विद
☞ धनु + विद्या = धनुर्विद्या
☞ धनुः + वेद = धनुर्वेद
☞ निः + लेप = निर्लेप
☞ धनुः + धारी = धनुर्धारी
☞ धनुः + धर = धनुर्धर

♦ **नियम-4:** यदि पदान्त अ/आ को छोड़कर अन्य किसी स्वर के परे विसर्ग हो और विसर्ग के परे अघोष व्यञ्जन (पहला, दूसरा व्यञ्जन वर्ण) हो तो निम्न परिवर्तन हो जायेगा।

अ, आ को छोड़कर अन्य स्वर (:) + च, छ = श् ।

अ, आ को छोड़कर अन्य स्वर (:) + क, ख, ट, ठ, प, फ = ष्।

अ, आ को छोड़कर अन्य स्वर (:) + त, थ = स्।

अ, आ के अलावा अन्य स्वर : + च, छ = स्।

☞ निः + चय = निश्चय
☞ निः + छल = निश्छल
☞ निः + चक्र = निश्चक्र

अ, आ के अलावा अन्य स्वरः + क, ख, ट, ठ, प, फ = ष्।

☞ निः + काम = निष्काम
☞ धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
☞ दुः + फल = निष्फल
☞ दुः + काम = दुष्काम
☞ निः + प्राण = निष्प्राण
☞ दुः + कर = दुष्कर
☞ दुः + प्रभाव = दुष्प्रभाव

अ, आ के अलावा अन्य स्वरः + त, थ = स्।

☞ निः + तेज = निस्तेज
☞ विः + तार = विस्तार
☞ दुः + तर = दुस्तर
☞ दुः + तेज = दुस्तेज
☞ विः + तर = विस्तर
☞ तिरः + कार = तिरस्कार

☞ **नोट:** विः + स्थापित = विस्थापित। परन्तु विः+स्थापित = विस्थापित होता है।

♦ **नियम-5:** यदि पदान्त इ, उ में से किसी वर्ण के परे विसर्ग हो और विसर्ग के परे 'र' हो तो इ +:= ई तथा उ + : = ऊ, हो जायेगा।

इः + र् = ई **उः + र् = ऊ**

☞ निः + रोग = नीरोग
☞ निः + रज = नीरज

☞ निः + रव = नीरव

☞ निः + रस = नीरस

☞ निः + रन्द्र = नीरन्द्र

☞ निः + रोध = नीरोध

☞ चक्षुः + रोग = चक्षूरोग

☞ दुः + रोग = दूरोग

☞ दुः + रम्य = दूरम्य

☞ दुः + राज = दूराज

☞ सुः + राज = सूराज

☞ निः + रन्ध्र = नीरंध्र

☞ धिः + रज = धीरज

♦ **नियम-6:** यदि पदान्त अ, आ के परे विसर्ग (:) हो और विसर्ग (:) के परे क, त, प में से एक वर्ण हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर 'स' हो जायेगा।

अ, आ : + क, त, प = स्।

☞ पुरः + कार = पुरस्कार

☞ भाः + कर = भास्कर

☞ वनः + पति = वनस्पति

☞ वृहः + पति = वृहस्पति

☞ वाचः + पति = वाचस्पति

☞ वयः + क = वयस्क

☞ नमः + कार = नमस्कार

☞ भाः + पति = भास्पति

☞ आः + चर्य = आश्चर्य

☞ नमः + ते = नमस्ते

☞ पुरः + चरण = पुरश्चरण

☞ मनः + चेतना = मनश्चेतना

☞ अंतः + तल = अंतस्तल

☞ मनः + चिकित्सा = मनोचिकित्सा

☞ अंतः + चेतना = अंतर्चेतना

☞ पुनः + चर्या = पुनश्चर्या

☞ पुनः + च = पुनश्च

☞ मनः + ताप = मनस्ताप

☞ पुरः + चरण = पुरश्चरण

☞ घृणाः + स्पद = घृणास्पद

☞ प्रायः + चित = प्रायश्चित

☞ मनः + संताप = मनस्संताप

☞ मनः + तेज = मनस्तेज

☞ परः + पर = परस्पर

☞ तिरः + कर = तिरस्कर

☞ बृहः + पति = बृहस्पति

☞ पुरः + कार = पुरस्कार

☞ पुरः + कृत = पुरस्कृत

☞ अन्तः + ताप = अंतस्ताप

☞ पुनः + सृजन = पुनश्सृजन

☞ पुनः + चर्वण = पुनश्चर्वण

☞ पुनः + संधान = पुनश्संधान

☞ पुनः + संस्कार = पुनश्संस्कार

☞ पुनः + संभव = पुनश्संभव

☞ अंतः + सार = अंतश्सार

☞ अतः + सार = अंतश्सार

उदाहरण :-

☞ यशः + घोष = यशोघोष

☞ निः + जर = निर्जर

☞	तेजः	+	पुंज	=	तेजोपुंज
☞	दुः	+	वह	=	दुर्वह
☞	निः	+	ईह	=	निरीह
☞	निः	+	झर	=	निर्झर
☞	भाः	+	कर	=	भास्कर
☞	स्वः	+	ग	=	स्वर्ग
☞	अहः	+	निश	=	अहर्निश
☞	निः	+	अक्षर	=	निरक्षर
☞	निः	+	जन	=	निर्जन
☞	निः	+	भर	=	निर्भर
☞	दुः	+	जन	=	दुर्जन
☞	निः	+	गंध	=	निर्गंध
☞	निः	+	अर्थक	=	निरर्थक

☞	निः	+	मल	=	निर्मल
☞	अन्तः	+	पुर	=	अन्तपुर
☞	सरः	+	रूह	=	सरोरूह
☞	ज्योति	+	चक्र	=	ज्योतिश्चक्र
☞	निः	+	छल	=	निश्छल
☞	चतुः	+	श्लोकी	=	चतुष्श्लोकी
☞	पयः	+	पान	=	पयोपान
☞	बहिः	+	थन	=	बहिर्थल
☞	चक्षुः	+	रोग	=	चक्षुरोग
☞	दुः	+	रम्य	=	दुरम्य
☞	अन्तः	+	द्वन्द्व	=	अन्तद्वन्द्व
☞	अन्तः	+	यामी	=	अन्तर्यामी
☞	अन्तः	+	देशीय	=	अन्तर्देशीय

◆◆◆